संचित धन

आत्मविश्वास—पर सदा विजय का नाम लिखा रहता है। लक्ष्य तक पहुँचने की एकाग्रता और स्थिरता आपको अवश्य ही सफलता दिलाने में सहायक होंगे।

आस्था—अपने अन्दर छिपे सत्य के बीज को पहचानने का नाम आस्था है।

कर्तव्य—पूरा करने से जो प्रसन्नता होती है वह प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है।

एकाग्रता—यदि आप चाहते हैं आगे जाना, संसार पर छाना तो अपने काम में खो जाइये, एकाग्र हो जाइये।

सदाचार—आचारहीन का कहीं सम्मान नहीं होता।

साहिष्णुता—यह गुणों में एक आनन्ददायक निखार ला देता है।

—इसी पुस्तक से

भाव प्रसून

सर पटकती तेरे द्वार पर,
आशा युवती बाला।
पल पल इसके धन्य बनादे,
दर्शन दे नन्दलाला।
विश्वासों की कड़ी जुड़ी है,
न टूटे लहर की माला।
आंसू के मोती-मोती पर,
नाम लिखा 'ऊपर वाला'॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संचित धन

प्रकृति प्रदत्त अनश्वर धन से जीवन में आगे बढ़ने के लिए युवकों को प्रेरणा देने वाली और दुविधाओं में धीरज का सम्बल देने वाली यह पुस्तक आपके लिए अपार संचित धन सिद्ध होगी।

लेखक – रामकृष्ण शर्मा 'राजर्षि'

मूल्य : 20.00

रणधीर प्रकाशन हरिद्वार

☐ प्रकाशक –

रणधीर प्रकाशन

रेलवे रोड़, आरती होटल के पीछे, हरिद्वार उ.प्र.

फोन: (0133) 426297

☐ वितरक –

रणधीर बुक सेल्स

रेलवे रोड, हरिद्वार, उ. प्र.

☐ मुख्य विक्रेता –

1. पुस्तक संसार बड़ा बाजार, हरिद्वार
2. पुस्तक संसार नुमाइश का मैदान, जम्मू तवी

☐ संस्करण – प्रथम 1994

☐ मुद्रक –

विष्णु आफसेट प्रिंटर्स, 1488 पटौदी हाउस, दरियागंज,
नई दिल्ली–110002 फोन 3268103, 3270561

'एक अवलोकन'

'शब्द' की महिमा अपार है । इसीलिए इसको 'शब्द ब्रह्म' का नाम दिया गया है । शब्दों का भावानुकूल संयोजन साहित्य की श्रेणी में आ जाता है । और सत्साहित्य के पढ़ने-पढ़ाने का सुख कितना अमृतमय है ! कौन बखाने उस ब्रह्मानन्द सहोदर सुख को !

प्रस्तुत लघु पुस्तिका में दिए गए निबन्धों के शीर्षकों का चयन भी और उनके रहस्योद्भेदन के लिए चयन किए शब्दों का संयोजन भी लेखक महोदय को 'शब्द संयोजन-कला' को अभिव्यक्त करते हैं ।

इस पुस्तिका का एक आद्यतन अवलोकन किया तो आचार्य जी रामचन्द्र शुक्ल द्वारा स्थापित एक अनुकरणीय परम्परा का स्मरण हो आया । क्रोधादि में अमूर्त्त मनोभावों के शब्द चित्रण की परम्परा । और शैली भी सरस ऐसी कि अन्त तक पढ़े बिना हृदय मानता ही नहीं ।

इस पुस्तक में भी उसी परम्परा का निर्वाह है । अमूर्त्त मनोभावों एवं चारित्रिक गुणों को अभिव्यक्ति दी है । शैली में उनका निजत्व झाँकता है । उनका स्वाध्याय प्रेम झलक कर सिद्ध करता है-शैली ही व्यक्ति है ।

युवकों और युवतियों के सामने आज का युग जितनी भी साहित्य सामग्री प्रस्तुत करेगा, उतना ही उनका भटकाव अर्थात् सत्पथ से विचलन कम हो सकेगा ।

इसी दृष्टि को अपनाकर लेखक महोदय ने गागर में सागर भरने का एक सत्प्रयास किया है । लघु निबन्धों के शीर्षक सात्विक मनोभावों से तो जुड़े हुए हैं ही, उनकी व्याख्या में उनके अनुबोधन एवं प्रबोधन हेतु दिए गए संदर्भ भी हृदयस्पर्शी हैं । वे बीते समय से भी और वर्तमान से भी जुड़े हुए हैं । वाक्य ही नहीं शब्द में भी उनका अनुभव समाविष्ट है । उभरी हुई वह आत्मानुभूति तो रसमयता उत्पन्न करती ही है, साथ ही एक मार्ग विशेष की ओर चलने को उद्बोधित और अनुप्रेरित करती है ।

मेरा विचार है कि श्री रामकृष्ण शर्मा जी की लेखनी द्वारा प्रस्फुटित यह पुस्तक भी प्रत्येक महत्वाकांक्षी के लिए सुमित्रवत् उपादेय सिद्ध होगी । मैं लगभग तीन-दशक से उनसे परिचित हूँ । वह अपने कथ्य और लेख्य सभी में अपनी विशिष्ट शैली से साधारणत्व को असाधारणत्व में बदल देने की कला में सुदक्ष हैं । प्रभु से प्रार्थना है कि जनहिताय उनकी लेखनी एक लम्बे समय तक सार्थक साहित्य उत्पन्न करती रहे । शुभम् ।

डा॰ केहर सिंह चौहान
एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (भूगोल), पी.एच.डी.

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

1.	आत्म लोचन	9
2.	आत्म विश्वास	15
3.	संकल्प शक्ति	20
4.	आस्था	36
5.	कर्त्तव्य	42
6.	हीन भावना	48
7.	एकाग्रता	55
8.	सदाचार	60
9.	सहिष्णुता	64
10.	सदाचारिणी आध्यात्मिकता	69
11.	भारत संस्कृति	73
12.	अनुशासन	81
13.	चरित्र	90
14.	परिश्रम	97
15.	अथकता	104
16.	दिवास्वपन	109
17.	समय	114
18.	उत्साह	118
19.	सच्ची पूँजी	124
20.	आंसू और मुस्कान	129
21.	सफलता लक्ष्मी	133
22.	पवित्र गायत्री	136

लेखक की अन्य चर्चित पुस्तकें –

1. **जन्म कुण्डली में ग्रह बाधा और निदान** – (ग्रहों की शांति के सरल और सहज घरेलू उपायों की अनूठी पुस्तक, इसमें दिये गये सरल उपाय अपनाइये और चहुंदिशि सफलता प्राप्त कीजिये।

2. **कल्याणकारी शनिदेवता** – दुःख दारिद्रय निवारण और शनि देवता की प्रसन्नता पाने के कई प्रयोगों के साथ साथ यह पुस्तक ज्योतिषियों व प्रत्येक वर्ग के व्यक्तियों के काम आने वाली है।

3. **अष्टाङ्ग योग रहस्य** – इस ग्रन्थ में लेखक ने प्रसिद्ध ग्रन्थ घेरण्ड संहिता का अनुवाद व उसकी व्याख्या देकर इस दुर्लभ पुस्तक के संस्कृत श्लोकों को सर्व सुलभ करने का अनथक प्रयास किया है। योगमार्गी तथा वेदान्ती बंधुओं के लिए यह संग्रहणीय ग्रन्थ है।

प्रकाशक

रणधीर प्रकाशन हरिद्वार

"Lack of Faith makes us miserable."

आत्मलोचन

(Introspection)

"स्वयं को पहचानने से अपनी शक्ति का ज्ञान होता है।"

—सन्तोषानन्द

अलौकिक शक्ति के मुक्तामणि,
नीलम औ' माणिक्य रतन।
इन मोहक मुखी नगीनों का,
सभी चाहते मुख-चुम्बन।
तुम्हारे मस्तक, भाग्य – मणि,
छिपाए बैठा अन्त:करण।
तुम योगी हो जन्मों के,
लिए अलौकिकता "संचित धन" ।। 1 ।।

"उठो ! विलाप मत करो। दुखों का अनतुला वजन तुमने ढोया है। बहुत दु:खी हो चुके हो तुम। सुखों का खजाना खो जाने की चिन्ता में तुमने अपना जीवन खोया है। छोड़ दो चिन्ताएं। चिन्ता-बीज बोने से फल भी चिन्ताओं के लगेंगे। त्यागिए चिन्ता-बीज की फसल बोना। तनिक आंख भर सामने को देखिए तो। सुख-सफलता-लक्ष्मी सामने खड़ी आपको पुकार रही है। परिवार सहित आपके घर आने को व्याकुल है। त्याग दीजिए सुखों के वियोग का दु:ख। आपका विवेक आपको आवाज दे रहा है। बुद्धि को स्थिर करके कान

लगाकर सुनो तो। कर्मों के पाश कर्म करने से कटेंगे। चिन्ता करने से, रोने से नहीं। दुःखों का रोना छोड़िए, सुख से नाता जोड़िए। आप वही हैं, जिसकी तलाश में सुख चहुं ओर भटक रहे हैं। दुःखों का दामन झटकिए। दुःखों से मन मंदिर को खाली कीजिए और देखिए वहां पर होती हुई सुखों की सुगन्धित और सुकोमल पुष्पों की वर्षा, सुख के महकते फूलों की झड़ी।"

मुनि और्व ने कहे थे ये शब्द, "एक दुखित और चिन्तित आत्मा को। जीवन के इस कर्म क्षेत्र में कर्म को त्यागकर चिन्ताओं को कर्म बनाना कहाँ की बुद्धिमत्ता है। समूचा संसार स्वागत करेगा आपके इस विचार का कि दुःखों से संघर्षरत होते हुए जीवन को कुन्दन कर देना है। संघर्ष की कसौटी पर खरा उतरना है। दुःख, विपत्ति और विघ्न समूहों के गर्व को खण्ड-खण्ड करके चूर-चूर करना है। दुःखों के अणु-अणु के दर्प को विखण्डित करना है। जिन्हें कुछ नहीं करके सब कुछ मिला है, उनके लिए उसका महत्व 'कुछ नहीं' के बराबर ही अच्छा है। क्या सार्थकता है उस सबकी और संघर्षहीन जीवन की। निर्भय होकर कर्मक्षेत्र में डटकर विघ्नों को भयभीत कर दीजिए। निर्भय होकर चिन्तन कीजिए। आप अभयराज हैं। अजेय हैं। स्वयं को पहचान कर देखिए, भय भी आप से भयभीत होते हैं। जाग्रत होइए, एक अंगड़ाई लीजिए। हुंकार कीजिए। अपनी शक्ति और सामर्थ्य से साक्षात्कार कीजिए।

आपके सुमंगलमय विचारों का प्रताप समूचे संसार को शक्ति दे रहा है। शक्ति पुंज का वह छौरा, जिसे आप नगर-नगर ढूँढते डोलते हैं, आपकी बगल में हैं। अटकाव और भटकाव के तनाव त्यागिए, चिन्ता छोड़िए, चिन्तन कीजिए, आत्मालोचन कीजिए।

ब्रोकर टी. वाशिंगटन, कोयले की खान में कार्यरत मजदूर था। उसने आत्ममंथन किया। अपने भीतर एक अलौकिक शक्ति को महसूस किया। उसने संघर्ष के तूफानों से आँखें चार करने वाली अपनी भीतरी शक्ति को पहचाना। दुःख, विपत्ति, संघर्ष और विघ्नों के समूहों से डटकर दो-दो हाथ किए। वह भूखा, प्यासा भी जूझा। उसे बिना सोये भी रहना पड़ा। अशंकित अथकता को मूलमंत्र बनाकर वह सिंह-शावक विघ्न समूहों पर टूट पड़ा। उसकी आत्मा अपने उद्देश्य पर केन्द्रित थी और रोम-रोम मानों गा रहा था। देखो रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रेरणा को। रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था, "अन्तः करण की पवित्रता, दृढ़ निश्चय और धीर वृत्ति, इतनी पूँजी से उद्योग शुरू कर देना चाहिए।" इतनी सब अलौकिक पूँजी का स्वामी होते हुए भी यदि मनुष्य दुःखों के सागर में गोते खाता रहे, डूबता-उतराता रहे, तो उसे कौन उबार सकता है? वाशिंगटन पहचान चुके थे अपनी शक्ति को। उन्होंने टैगोर की अंशकित अथकता को जीवन का सार मानकर गुनगुनाया:-

चूर-चूर रग रग के तार,
थकी थकी धड़कन धड़कन।

हसरत की भरपूर नजर से,
ताक रही है थकन, वेदन।
दु:खी, शिथिल बल-सौष्ठव,
मूर्छित संकट शूलों में।
विश्राम न दो, प्रभु दो वरदान
अशंकित अथकता "संचित धन" ।।2 ।।

जब शरीर की नस-नस भी थकी हुई हो। शरीर कार्य करते हुए थक चुका हो। धड़कन-धड़कन थकी हुई हो। दु:खी होती हुई थकान विश्राम करने के लिए व्याकुल हो। शक्ति भी दु:ख से संघर्ष करती हुई संकट रूपी काँटों में थकान और मूर्छा का आभास करने लगे, तब भी मैं विश्राम न लूं। हे भगवान! मुझे वरदान दो कि अथकता को "संचित धन" बनाऊं और सत् पथ पर आगे बढ़ता हुआ अपने लक्ष्य का भेदन करूँ।

और वह परिश्रम-बांकुरा सफल हुआ अपने उद्देश्य में। उसने महानता की बुलन्दियों को छुआ। बुलन्दियां धन्य हुईं वाशिंगटन को पाकर। अपनी शक्तियों में भरोसा, अपना आत्मबल उपलब्धियों का आधार है। स्वयं में श्रद्धा होना प्रफुल्लता के कोष की प्राप्ति है। श्रद्धा रूपी बर्तन में प्रसन्नता के सुगन्धित और स्वादिष्ट मोदक और मिष्ठान के भण्डार हैं। प्रसन्नता मोदकों का रसास्वादन करते रहना, प्रसन्न बने रहना, सभी प्रकार के शुभ परिणामों की सूचना है। अत्यन्त, प्रकाशमान एवं शोभन ज्ञान की प्राप्ति का सार हर क्षण विराजमान रहने वाली मन की अतुलनीय प्रसन्नता है। निराशा के

अज्ञान रूपी अन्धकार का संहार कीजिए । शुभता के आशावान प्रकाश को फैलने दीजिए। कर्मफल के वृक्ष पर सुख-दुःख के फल लदे पड़े हैं । शुभ विचारों की प्रकाश शक्ति विशालकाय दुःख दैत्य रूपी अंधकार को समूल नष्ट करने की सामर्थ्य रखती है । शुभ विचारों की अग्नि में दुःख के फल भस्मीभूत होकर खाक बन सकते हैं । तीव्र वेग वाली त्रिभुवन पावनी ज्ञान की गंगा में आपत्तियों-विपत्तियों की अनेक जिह्वी ज्वालाएं शान्त हो जाती हैं । पुरुषार्थ और सुकर्म साधना से जो चाहें, पा सकते हैं । क्योंकि :-

मनोरथ वाले खोटे सिक्के,
दे सकते नहीं सुख साधन ।
स्वर्णागन में लक्ष्मी के,
पुरुषार्थ वृक्ष पर फलता फल ।
बनें त्यागी, आलस्य त्याग,
खुलें हमारे उद्योग द्वार ।
सुकर्म साधना से सम्भव,
खुशहाली का "संचित धन" ।। 3 ।।

अँग्रेजी में एक कहावत है, इच्छाएँ यदि घोड़े होतीं, भिखारी भी सवारी किया करते । मनोरथ से कुछ भी मिलने वाला नहीं है । आप पुरुष हैं, पुरुषार्थ कीजिए और पा लीजिए सारे सुख साधनों को ।

शरीर, मन, आत्मा और बुद्धि ये सब मिलकर पुरुष कहलाते हैं । मनुष्य के द्वारा इन सबको संतुष्ट एवं प्रसन्न रखने के लिए जो प्रयास किया जाता है, वह

पुरुषार्थ है । या यूँ समझ लें कि कुल मिलकार धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, की प्राप्ति के लिए परिश्रम ही पुरुषार्थ है । सांसारिक सुखों को प्राप्त करना और आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर होना पुरुषार्थ का कार्य है । नैतिकता इसका मेरु दण्ड है । नैतिकता का पल्लू थामते हुए सुकर्म-साधना कीजिए । मन को दृढ़ संकल्पों से भरपूर करके आगे बढ़िए, मंजिल सामने है ।

विकट, क्रूर और गुस्सैल जमींदार था वह । साथ ही साथ वह बहुत बिगड़ैल भी । एक असहाय, अनाथ बालक उसके झूँठे टुकड़ों पर पल रहा था । उसके लात, घूँसे भी बालक की मजबूरी सहती थी । बालक सभी असह्य पीड़ाएँ सह रहा था । एक दिन यातनाओं का कडुवा घूँट पीता हुआ वह अपने पुरुषार्थ से टकरा गया । उसके पुरुषार्थ ने झकझोर डाला उसे । उसका संकल्प जागा, आत्म-विश्वास तरंगित हो उठा । रोम-रोम संकल्पित हो गया । मन ही मन बालक ने एक दृढ़ निश्चय का बीज बोया कि इस जमींदार को दिखाना है कि ऊँचाई क्या है ? लग्न उसका सहारा बन गई । नींद इशारा बन गई । परिश्रम इष्ट देवता बने । रात-दिन एक किया । फाके काटे । सुकर्म के प्रयास में जीवन की सांस-सांस जुटा दी । और एक दिन परिश्रम की भीषण अग्नि में तप, निखर कर सोना कुन्दन बन गया । आज महान कलाकार है वह । सभी फ़क्र करते हैं उस पर, उसके परिश्रम-पुरुषार्थ पर ।

"सब कुछ कर सकने में समर्थ-पुरुषार्थी"

विश्वास जीवन है, संशय मौत ।

– स्वामी विवेकानन्द

आत्मविश्वास

(Self-Confidence)

रग्घू किसान के खेत में क्या सरसों लहलहा रही है । देख देखकर मन की कली-कली लहर-लहर सी लहराती है । पीली सरसों के रूप में उसका पसीना रंग लाया है । उसके परिश्रम और बहाए पसीने रूपी मोतियों की अनगिनित बहुमूल्य लड़ियों का मिश्रण करके मिट्टी को अमृत बनाया है उसने । विश्वास की दृढ़ता के बीज आज खेत में पीला सोना बनकर लहलहाये हैं ।

सुकर्म साधना के लिए आवश्यक है मन के खेत में आत्म-विश्वास के बीज बोना । लेकिन हीन भावनाओं के रहते आत्म-विश्वास की पौध नहीं पनप सकती । मन की भूमि को आत्मविश्वास का बीज पनपने के लिए तैयार करना होगा । पसीना, आस्था और श्रद्धा से मन भूमि पर निष्ठा का हल चलाकर उस पर आत्म विश्वास का बीज बोने से उसमें कल्ले फूटेंगे, वह हरा भरा पौधा बनेगा । बात का प्रारम्भ भी यही है । अब उस आत्मविश्वास के पौधे की रखवाली एकाग्रता से करनी होगी । सद्विचारों की बाढ़ लगाकर उसकी

अन्य कुविचारों से रक्षा करनी होगी । तब आत्म-विश्वास बनेगा एक वट वृक्ष सा महाकार । उस पर लगेंगे प्रभाव, उत्साह, तेज, आशा और कार्यकुशलता के सुगन्धित और स्वर्णिम फूल और फल । उन पुष्प प्रसूनों से आप महका सकेंगे अपने और परायों के घर-आंगन । जब आत्म विश्वास के पुष्प सुमन खिल उठेंगे, आपका प्रफुल्लित मन गाने लगेगा :-

परिपूर्ण सब काम हुए,
पूर्ण हुए सोच स्वप्न ।
सद्भाव के गुलदस्ते में जब,
शुभ विचार के सजे सुमन ।
उमंग-सजावट से महकेगा,
प्रसन्नता का घर आंगन ।
आत्म विश्वास की दृढ़ता से,
पाया मन चाहा "संचित धन" ॥ 4 ॥

卐

सद्भाव के गुलदस्ते में जब शुभ विचारों के फूल खिल उठेंगे । संसार के सब कार्य पूरे होने लगेंगे । सारे सोच, स्वप्न पूरे हो जाएंगे । उमंग को अपनाइए, इसकी सजावट से प्रसन्नता का घर आंगन उल्लासित होगा । आत्म विश्वास की दृढ़ भावना से आप मनचाहा धन प्राप्त करने में पूरी तरह से सफल हो सकेंगे। सद्भावना में शुभ विचार बसते हैं । शुभ विचारों में अपार शक्ति है ।

संसार वृक्ष को मैं हिला दूं,
दर्प-दैत्य को धूल चटा दूं ।
कीर्तिमान हूँ पर्वत जैसा,
समुद्र सोख लूं, जगत हिला दूं ।
ऊँचे उदित ज्ञान का गौरव,
मानों सूर्य की रश्मियों में ।
यही एक विचार सर्व सिद्धि है ।
अटल विश्वास का "संचित धन" ।। 5 ।।

卐

अटल, अटूट और दृढ़ आत्मविश्वास के आलोक-प्रकाश में आप पा लेंगे अलौकिक शक्ति का संचार, संघर्षों से जूझने की अतुलनीय शक्ति और अपनी सुखद कामनाओं की प्राप्ति का सुखद मार्ग । निश्चित मानिए आपके आत्मविश्वास पर नाम खुदा हुआ है – शुभ, सुखदा धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष का । आत्मविश्वास बढ़ाइये । साहस का धन, पक्का इरादा और लग्न स्वमेव आपके बनेंगे । आत्म विश्वास पर सदा विजय का नाम लिखा रहता है ।

हाकी के प्रसिद्ध खिलाड़ी ध्यानचन्द भारत की टीम में इंगलैंड के विरुद्ध खेल रहे थे । अदम्य साहस के अद्वितीय खिलाड़ी थे वे । लेकिन इंगलैंड की टीम भारी पड़ रही थी । वह दो गोल से आगे चल रही थी और केवल 10 मिनट शेष थे । भारत की इस हार को जीत में बदलना हर प्रकार से असंभव लग रहा था ।

ध्यानचन्द्र के कानों में एक आवाज पड़ी, "ध्यानचन्द ! हार कर भारत में क्या मुंह दिखाऊँगा।" कैप्टन के शब्द थे। बात लग गई। ध्यानचन्द का आत्म-विश्वास दुगना हो गया कि यह मैं ही हूँ जो भारत के नाम को ऊँचा उठाने के लिए दांव पर लगने की योग्यता रखता हूँ। कैप्टन ने भी नाव उसी के सहारे छोड़ दी है। क्षण भर बाद ही अजूबा हुआ; एक जीता जागता जादू हुआ कि ध्यानचन्द हाकी से लगी गेंद को बिना किसी को पास किए स्वयं संघर्षों से जूझते, तूफानी खिलाड़ियों के दांवों को काटते 'डी' में पहुँचे और ये गोल! ऐसा जादू उन्हीं चन्द मिनटों में तीन बार हुआ । यह था एक दृढ़ आत्मविश्वासी के अदम्य साहस का जादू । यह थी भारत की अलौकिक जीत । ध्यानचन्द के आत्मविश्वास ने भारत की हार को जीत में बदल कर रख दिखाया । कविता के माध्यम से हमें इसे इस प्रकार भी गुनगुना सकते हैं :-

ठान लिया बस कर लेना है,
अच्छा कार्य जब जाए ठन ।
आत्मविश्वास से सब कुछ सम्भव,
भावनानुरूप सम्पादन ।
सुन्दर उच्चा भाव रहेंगे,
उच्च रहेगी यदि लगन ।
सम्भव हो जाए असम्भव भी,
यदि शुद्ध भावना "संचित धन" ।।6 ।।

卐

जब किसी शुभ कार्य को करने का मनुष्य के मन में एक दृढ़ निश्चय हो जाता है। वह कार्य पूरा हो जाता है। आत्मविश्वास से सारे कार्य सम्भव हो जाते हैं। उच्च भावना मनुष्य के असम्भव कार्य को भी सम्भव कर सकती है। शुद्ध भावना रूपी पूंजी को कमा करके मनुष्य हर सत्कार्य पूरा कर सकता है।

इसीलिए तो आपको सुदृढ़ होना है, आपको जीतना है। आपका जन्म जीतने के लिए हुआ है। जीतने की शक्ति के विश्वास को सफल बनाइए। लक्ष्य पर पहुँचने की एकाग्रता और स्थिरता आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचने में भरपूर सहयोग करेगी। शुभ संकल्प के आगे क्या कोई टिक सका है? देवता भी मनुष्य के सुसंकल्प और आत्मविश्वास से हमेशा प्रसन्न हुए हैं।

आत्म विश्वास की पूँजी ले, नित्य धैर्य के संग।
पुरुषार्थ से जग जीतती, परिश्रम की खंग।।

संकल्प शक्ति

(Will Power)

"मुसीबतों को हौसले से झेलो, इनसे घबराना अपने काम को बिगाड़ना है, मुसीबत में ही आदमी का इम्तहान होता है ।"
– लाला लाजपतराय

महिमा वृक्ष का फल न तो इतना मीठा है कि किसी को मधुमेह रोग हो जाए। न ही इतना फीका कि कोई स्वाद न आए। इस वृक्ष का फल चखने के लिए परिश्रम की पौध लगानी पड़ती है। पसीने की बूंदों से सींचने पर प्रसन्नता के फूल खिलते हैं। आपके पास यदि स्वावलम्बन का थोड़ा भी संचित धन है, तनिक सा बटोरा हुआ साहस है तो महिमा को अपने कृत्यों से धन्य हुआ समझें। संकल्प शक्ति से सम्पन्न समझें। संकल्प शक्ति की न्यूनता ने जिसे निराशावादी, अशांत, क्लांत, असफल और निरुत्साही बनाया था, कल का अखबार साक्षी है, उसने आत्महत्या कर ली है। आज पर अधिकार है आपके संकल्पों का। अत: आलस्य की चादर फेंकिए। संकल्पित होकर दोहराइए :-

हिम्मत न हार, बिसार न राम,
दादी मुख से सुना कथन ।
जो साहस का परिचय देते,
उनकी सुन लेते भगवन ।
संकटों की आँखों के सूर्य,

बरसा दें चाहे भीषण अगन ।
तुम साहस का हाथ थाम लो,
जीवन संजीवनी "संचित धन" ।। 7 ।।

卐

जीवट का जीवन जीना ही वास्तविक जीवन है । मखमली गद्दे और चहुँ दिशाओं से बटोरां हुआ असीम धन उद्देश्य हीन सुख प्राप्त करने का दुःख ही दे सकते हैं । कभी समाप्त न होने वाला आनन्द नहीं । संकटों की आँखों के सूर्य चाहे भीषण-अग्नि बरसा दें, साहस-बली व्यक्ति से आँखें मिलाना उनके लिए असह्य होता है । वह सब दुःखों पर विजय प्राप्त करके अपने संकल्प की विजय-पताका फहराता है ।

गंग तीर मंदिर पूजा को,
लहर चली गंगा से विलक्षण ।
सर पटका चट्टान से उसने,
किए बहुत अर्चन बन्दन ।
ठान लिया अब मरण या पूजन,
किए तीव्र टक्कर प्रयत्न ।
राह बनाली उसे तोड़कर,
बटोर उत्साह का "संचित घन" ।। 8 ।।

卐

"गंगा मंदिर में पूजा करने के लिए, गंगा माँ के दर्शन को व्याकुल एक लहर जल में से उठकर चली । सामने अडिग चट्टान उसकी राह रोके खड़ी थी । उसने

सिर पटका । प्रार्थना की कि वह राह दे दे, उसकी पूजा में विघ्न न डाले । लेकिन जब उसने प्रार्थना भी सुनी अनसुनी कर दी । तब उसके आत्मविश्वास ने ठान लिया कि मरना है या पूजन करना है । उसने अपने टक्करों के प्रयास की निरन्तरता को बढ़ाकर चट्टान में से राह बना ली । उत्साह और आत्मविश्वास जिसके पास हो, उसके लिए भला कुछ असम्भव हुआ है कभी ? कदापि नहीं ।

जिन महापुरुषों को आज हम नत-मस्तक होते हैं, अपने श्रद्धा-सुमन चढ़ाते हैं उनके जीवन की सतत साधना, सफ़लता संकल्प शक्ति के मूल में निहित थी। इस शक्ति से विहीन व्यक्ति निश्चित ही निराशा, अप्रसन्न और निरुत्साही होते हैं । इन्हें प्राय: जीवन से अनेक शिकायतें होती हैं। अत: निरुत्साह छोड़, उत्साही बनिए। संकल्प को दृढ़ कीजिए। अंत:करण को पवित्र और प्रसन्न रखिए। चमत्कारों की सौगात आपकी होगी। सफलता की बात आपकी होगी ।

धूप तापती ओस बूंद के,
हाथों में जब उठी जलन ।
"लुढ़कने के श्रम में आनन्द
सुस्ताना है गहन पतन",
वह बोली "सीख लिया मैंने
सारी सृष्टि का दर्शन ।
उत्तम यत्न व सजग चपलता,
जड़ चेतन का "संचित धन" ।।9 ।।

卐

धूप सेंकने से जब ओस की बूंद असह्य गर्मी न सहन कर सकीं, वह लुढ़कते हुए बोली, सारी सृष्टि का दर्शन यही है कि सुस्ताना और आलस्य पतन के कारण होते हैं। इसलिए परिश्रम का संकल्प लिए परिश्रम करना चाहिए। लुढ़कने के श्रम का अपना मजा, अपना आनन्द कुछ और ही है। किसी भी कार्य में सबल प्रयास, सजगता और चपलता प्रत्येक जड़ चेतन का "संचित धन" है।" ओस बूंद का यह संदेश हर व्यक्ति के लिए आत्मज्ञान है । सत्य का जल बुराई रूपी अग्नि को शांत कर देता है । सत्य आचरण कार्य क्षमता वृद्धि करने वाला टॉनिक है । निज को पहचानने से व्यक्ति को अपनी शक्तियों का आभास होता है । असीम शक्ति का स्वामी है मानव । ज्ञान न होने से वह अपनी शक्ति का अधिक से अधिक बीसवां भाग ही प्रयोग कर पाता है । संकल्प को गुण प्रधान माना गया है । मनुष्य की आंतरिक शक्तियां सब प्रकार की सिद्धियां हैं । देर है पहचानने की । जानिए, स्वयं को पहचानिए और उठिए संकल्प शक्ति के साथ। उपनिषद कहते हैं कि "यह पुरुष संकल्पमय है ।" संकल्प से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है ।

नाम तो उसका रामनाथ था लेकिन अधिक दुःखी रहने के कारण लोग उसे दुःखी राम कहने लगे थे । वह दुःख और पीड़ाओं के फलों से लदा अपने जीवन के चालीस वर्षों का भुगतान कर चुका था । कोई राह नहीं, कोई चाह नहीं, उसके पास थी केवल आह,

दुःख की आह। एक दिन किसी ने उसे एक मंत्र दिया। मानो संचित धन मिल गया। परिश्रम, उत्साह, पवित्र अंतःकरण की पारस पथरी मिल गई। छोटे से कृषि कार्य में संकल्पित मन लगाया। 5 से 10 बीघा भूमि हुई। आज वह प्रसन्न है। 200 बीघे जमीन का मालिक है। लोग उसे अब महाराज रामनाथ जी कहते हैं। संकल्प शक्ति का चमत्कार अद्भुत है।

सत्य जल करता, अग्नि शीतल,
बने सच्चाई निज जीवनं।
कार्य क्षमता, विश्वासों के,
करें भावों का जागरण।
सहस्त्र हाथियों से अधिकाधिक,
शक्ति का हममें भण्डारण।
हम अनन्त कुछ पहचानें तो,
निज शक्ति का "संचित धन" ॥ 10 ॥

卐

जब तक व्यक्ति अपनी संकल्प शक्ति से साक्षात्कार नहीं करता वह दुःख के बोझ तले दबा रहता है। वह ढेरों दुःखों की लम्बी सूची लिए घूमता है। उसके हृदय में असमर्थता का झरना बहता रहता हैं। शक्ति को पहचानते ही उसकी सामर्थ्य लौट आती है। वह कुछ का कुछ हो जाता है। हनुमान जी ने जब समुद्र पार करने में असमर्थता प्रकट की। जामवन्त ने उन्हें उनकी संकल्प शक्ति को स्मरण कराया। वे भीषण

समुद्र लाँघ गये। संकल्प शक्ति के बल पर अंगद ने रावण की सभा में अपना पाँव रोपा, जिसे बड़े-बड़े योद्धा और मल्ल भी नहीं हिला सके। आज भी अपने साधारण जीवन में हम संकल्प शक्ति के अनेक चमत्कार देखते हैं। सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गाँधी व देशभक्त शहीद संकल्प के बल पर देश को स्वतन्त्र करा पाए। इसी बल पर आप अनेक प्रतियोगिता जीतते हैं। इस शक्ति को प्राप्त करने के लिए मन को वश में करने का अभ्यास अति आवश्यक है। जिनका मन वश में नहीं है, वे संकल्प रहित और संकट सहित देखे गये हैं। अतः मन के घोड़ों की लगाम कसिए और संकल्प शक्ति को हृदय में जगाइए।

कल्प वृक्ष है स्वयं मानव,
लिए स्वस्थ तन सुन्दर मन।
अच्छे और बुरे भाव हैं,
उसके सोचे उत्थान पतन।
आशा, मित्रता, महत्वाकांक्षा,
और सौजन्यता का चन्दन।
स्वगन्ध से सदा महकता,
निज इच्छा शक्ति "संचित धन" ॥ 11 ॥

卐

पुस्तक में पढ़ा था, "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।" वास्तव में हृदय की हार जुआरी जैसी है। दिवास्वप्न हैं, शेखचिल्ली के सपने। ऐसे सपनों

को तो केवल स्वप्न में ही पूरा किया जा सकता है।

अच्छे तगड़े सूर्य से आँख मिलाने वाले यौवन भी दिवास्वप्नों से हारते देखे गये हैं। जीत से आँखें मिलाना सीखिए। विजय सदा सर्वदा आपका वरण करेगी। उसे असीम सुख मिलेगा आपके अभिनन्दन में। आपके उद्देश्य की पूर्ति ईश्वर सी पूर्ण बनकर सिद्धि को प्राप्त होगी। संकल्प-शक्ति के धनी भारत के महापुरुषों से इतिहास गौरवान्वित हुआ है। ध्रुव जैसे बालक के संकल्प के समक्ष भगवान को स्वयं झुकना पड़ा। उन्हें आना पड़ा और ध्रुव को अपने अंक में बिठाना पड़ा। भगीरथ प्रयत्न तो मुहावरा बन गया। उनके तप प्रयत्न गंगा को धरती पर लाए। भीष्म प्रतिज्ञा क्या संसार प्रसिद्ध नहीं है? भीष्म की प्रतिज्ञा के आगे भगवान श्रीकृष्ण को अपनी शपथ भंग करके युद्ध भूमि में शस्त्र उठाना पड़ा। चाणक्य की महानता और संकल्प शक्ति से कौन परिचित नहीं। नन्द वंश के शक्तिशाली साम्राज्य का नाश उन्होंने अपनी शिखा खोलकर किया। कहाँ तक किया जाए इस शक्ति का वर्णन। यह शक्ति धरती के अणु-अणु में वर्तमान है। आपके रोम-रोम में विद्यमान है। आपके जागृत भर होने की देर है। भेड़ों के बीच रहता हुआ सिंह-शावक जब अपने को पहचान कर एक हुंकार भर के भयंकर गर्जना करता है तो निर्बलता रूपी सब भेड़ें भाग जाती हैं। ठाकुर यशपाल सिंह लोकसभा की सीट के लिए उम्मीदवार थे। उनका संकल्प था कि "विजयी हुए बिना खाट पर नहीं

सोऊँगा। संसार के किसी सुख को नहीं अपनाऊँगा।" उनके संकल्प ने उन्हें विजयी बनाया। बला की सामर्थ्य है आपके संकल्प में। इस सामर्थ्य को पहचानिए और बार-बार गाइए -- बार-बार गुनगुनाने से शक्ति प्राप्त होती है।

> असली अमृत कण-कण मेरा,
> स्पष्ट चमकता खुला खजाना।
> शरीर नहीं मैं आत्म तत्व हूँ,
> परम तत्व का जाना पहचाना।
> हर कोई कार्य जगत का,
> करने की मुझमें सामर्थ्य लगन।
> यही विचार सर्वसिद्धि है,
> अटल संकल्प का "संचित धन" ॥ 12 ॥

卐

मन चंचल है। यह तोता चश्म है। घड़ी-घड़ी बदलता रहता है यदि मन की हारी बाजी जीतनी है, ऊपर के इस पद को बार-बार दोहराइए। मन में शक्ति का संचार होगा। जिन लोगों ने हीन भावनाओं को पल-पल मन की हर बात मान कर पाला-पोसा है, उनके लिए संकल्प पर डटना कठिन और दुस्तर है। उनके लिए आवश्यकता है निरन्तर अभ्यास। संकल्प शक्ति प्राप्त करने का अभ्यास। छोटे-छोटे संकल्प कीजिए, उन्हें पूरा कीजिए। फिर और बड़े उद्देश्य पर संकल्पित होइए और पूरा करने में समस्त शक्ति लगा

दीजिए। इस प्रकार क्रम से आप बड़े से बड़ा संकल्प भी पूर्ण करने में समर्थ हो सकेंगे। यह सर्वसिद्ध विचार है कि आप सर्व-समर्थ हैं, असली अमृत हैं। अमृत के कण-कण पर आपका अधिकार है। आप चमकता हुआ खजाना हैं। आप केवल शरीर नहीं, आत्म तत्त्व हैं।

सत्कर्म सुकर्म हों प्राणवान,
हो सद्विचार बीजारोपण ।
पौध लहराए अच्छाई की,
शुभ कर्मों के प्रदर्शन ।
चकित जगत हो दृढ़ निश्चय से,
करें तुम्हारा अनुकरण ।
मन दृढ़ता आधार बने,
शुभ संकल्प तुम्हारा "संचित धन" ॥ 13 ॥

卐

जब व्यक्ति के सत्कर्म प्राणवान होते हैं, उसमें सद्विचार बढ़ते हैं। अच्छाई की पौध जितना बढ़ती जाएगी, शुभ कर्मों की फसल उतनी ही अधिक लहलहाएगी। चकित होगा ये संसार आप के कार्यों से। आपके दृढ़ निश्चय का लोग अनुकरण करेंगे। मन की दृढ़ता का आधार जब शुभ संकल्प होंगे, सभी आपके आदर्शों को अपनाएंगे।

स्वयं को दीन-हीन, अधम और पतित समझना नादानी है। तुम सार हो इस निस्सार जगत के। आपका आत्मविश्वास

जग जीतने की सामर्थ्य रखता है। जीवट का जीवन जीने का आनन्द प्राप्त करके देखिए। जीवन का प्रयोजन ही कर्म है। कर्म को पूजा बनाइए। कर्म में निहित हैं सारे सुखों के बीज! कर्म के लिए थोड़े से संकल्प की आवश्यकता है। साहस के संग उठिए। सभी प्रकार के ऐश्वर्य, वैभव पर आपका अधिकार होगा । सारे वैभव आपके लिए ही बने हैं । चढ़ते हुए सूर्य का यौवन आपकी संकल्प-शक्ति में है । आप ही वह जादूगर हैं जो हर प्रकार का जादू करने में सक्षम हैं।

वह बालक जिसे कुत्तों के साथ बैठकर जूठन खाने को दी जाती थी, अपने संकल्प को टटोल कर एक दिन जूठन खिलाने वाले का मालिक बना ।

आप में क्या नहीं है ? गुणों के ये बीज धरे-धरे निरर्थक रह जाएंगे । उठिए इन्हें पौध बनने दीजिए और मनचाहा सुख लीजिए क्योंकि:

न समझो स्वयं को महा अधम,
दीन हीन तत्व सार विहीन ।
निस्सार जगत का सार तुम्हीं,
जगाओ अपना तनिक यकीन ।
देखो जीवट जीवन जीकर,
कर्म हित जीवन का प्रयोजन ।
शुभ संकल्पों में मिल जाएगा,
खोया साहस "संचित धन" ॥ 14 ॥

卐

शुभ संकल्पों में बला की सामर्थ्य है। जगत के असीम सुख़ आपकी प्रतीक्षा में हैं। अपार सुख सम्पदा की कुन्जी आपकी मुट्ठी में है। तनिक विश्वास अंकुरित होने दीजिए। जब ईश्वरीदास वक्ता के रूप में बोलने के लिए स्टेज पर आया। वह घबरा गया। हाथ पाँव छूटते से महसूस होने लगे। कण्ठ सूख गया। मुख से एक शब्द भी नहीं निकल पाया। कंपकंपी सी आने लगी। ज्ञान पर भय की मलिनता छाने लगी। असमर्थता ने उसके हाथ पाँव जकड़ लिए। भीड़ को मौका मिल गया। लोग खिल्ली उड़ाने लगे। वह निराश और हताश हो गया। अपमान, उपहास और लोगों के उपालम्भ सहता हुआ, कुछ भी न कहता हुआ वह स्टेज से नीचे आ गया। वह घर पहुँचा। अपने भीतर की समस्त शक्तियों को समेटने में लग गया। पूँजी हस्तगत हुई। अटूट संकल्प पर डटकर उसने दीवारों को अपना भाषण सुनाने का अभ्यास किया। वह एक सफल वक्ता बना। एक कुशल और सर्वश्रेष्ठ वक्ता के रूप में उसने चहुँ ओर नाम कमाया। स्वयं को दीन हीन मत समझिए। शुभ संकल्प जगाइए, अपने और दूसरों के अन्धेरे दूर भगाइए।

मन चाहा फल पा सकता है,
गागर में सागर सा मन।
यह प्रकाश का महा पुंज है,
चढ़ रहे सूर्य का यौवन।

संकल्प मनोबल की आंखों में,
जादू जैसा आकर्षण ।
जो मांगोगे मिल जाएगा,
संकल्प यदि है "संचित धन" ॥15॥

卐

सफलता प्राप्त करने के लिए अन्य किसी भी साधन की अपेक्षा तुम्हारा आत्म विश्वास अधिक सहायक है ।

– अब्राहम लिंकन

संकल्प एक जादूगर है, आपके कार्यों को पूर्णता देने का इसमें विशाल आकर्षण है । यह चुम्बक है, जिसमें आपके सोचे हुए कार्य पूर्णता को प्राप्त होकर आकर्षित होते हैं । आपका संकल्प चढ़ते सूर्य के यौवन जैसा है । जो भी आप चाहते हैं, आपका शुभ संकल्प सब कुछ प्रदान करने की शक्ति रखता है ।

दहेज भक्षी स्वजनों से पीड़ित कलिका सी युवती संकल्प बल से साहस बटोर कर आत्मविश्वास जगाकर अपने पति से बोली, "ये भयंकर यातनाएँ मुझे नहीं मार सकतीं। मारने वालों को भी मरना है एक दिन। हे यातना के रूप पति परमेश्वर! लगता है इन यातनाओं के संग तुम सदा ही जीवित रहोगे । आज छोड़ती हूँ आपका यह नरक द्वार आपके लिए ।" वह विशुद्ध सत्य संकल्प प्रतिमा सरिता देवी आज प्रधानाचार्या है, जो हजारों कलिकाओं में संकल्प शक्ति का संचार कर के उनके जीवन को आत्म विश्वास से सुवासित कर रही है ।

साहस मानव का सम्बल,
ईश्वर देता साहस क्षण ।
आलस्य छोड़कर, अपना लें-
पक्का इरादा और लगन ।
जागृत बल से कर पाओगे,
मन चाहा मंच मंचन ।
एक सत्य बल अपना संबल,
दृढ़ निश्चय का "संचित धन" ॥ 16 ॥

卐

खाते पीते परिवार का आकर्षक नवयुवक था शोभन । एक शोख नवयौवना के बाल जाल में अपना दिल उलझा बैठा । युवती पर जवानी फटी पड़ रही थी । शोभन के दिल पर उसके प्रेम की छुरी भीतर तक असर कर गई । कहते हैं, प्यार में आदमी अन्धा हो जाता है । युवक ने भी माता पिता, घर बार विष-सुन्दरी के लिए छोड़ दिये । यहां तक कि कारोबार का धन नवयौवना की भेंट चढ़ा दिया । युवक के तन, मन, धन को निचोड़कर छलनामयी ने केंचुली बदल ली । किसी करोड़पति से शादी कर ली । नवयुवक की मानसिकता बिगड़ गई । उसके मस्तिष्क की चूलें हिल गयीं । वह चौपट हो चुका था । जीवन को धिक्कार रहा था । घर छूटा, माता पिता, भाई बहन छूटे, कारोबार 'स्वाहा' हुआ । क्या शेष रहा । ये कर्तव्यहीन जीवन । उसे आत्म-ग्लानि हुई । आत्महत्या करने का विचार आया । वह चल दिया । मांगकर कुछ पैसे एकत्र किए ।

मरने के लिए जहर खरीदा । पुड़िया खोली और जैसे ही खाने को तैयार हुआ, उसने पुड़िया के पर्चे को पढ़ा । "दुःख छोड़ संकल्प पर डट, कर्तव्य से न हट । जीवन जीने के लिए है ।" कई बार पढ़ा । आत्महत्या का विचार गायब हो गया । उसे मूलमंत्र की निधि मिल गई । नए सिरे से जीवन को प्रारम्भ किया । छोटे-छोटे कार्य प्रारम्भ करके उन्नति करते हुए अपने संकल्प के बल पर उसने अपनें कारखाने का मुहूर्त कराया है । उसने जीवन के मूल मंत्र को समझ लिया है ।

आपका संकल्प एक गैबी शक्ति है । अपनाइए और मन चाहा पाइए ।

केवल एक गुण चमक जाने से,
चमक उठेगा तन मन धन ।
जैसे रगड़ से हीरे का,
मुखरित हो उठता यौवन ।
घना अलौकिक बल है तुममें,
करो जानने का प्रयत्न ।
प्रभु की देन प्रचंड संकल्प,
गैबी शक्ति "संचित धन" ॥ 17 ॥

卐

दुःखों के तार मनुष्य से जुड़े हों और वह उस दुःख के बारे में चिन्तित रहे, सुख का प्रकाश सम्भव नहीं । यह नगेटिव तार है । नगेटिव और नगेटिव से सुखों की तरंग नहीं निकल सकती । दुःख हैं तो सुखों

के विचार कीजिए। उन पर संकल्पित होइए। संकल्प का एक गुण बाकी सब गुणों को अपने पास बुलाने की सामर्थ्य रखता है।

याद कीजिए स्वामी विवेकानन्द के शक्ति पुँज शब्दों को:–

The remedy for weakness is
not brooding over weakness,
but thinking of strength.
Teach men of the strength
that is already within them.

सोच सोच अभी और सोच,
सूझ बूझ के पखार चरण।
भले विचार और भली सूझ के,
सब करते सौ सौ वन्दन।
बुरे विचार के आगमन से,
दूषित होगा मन–पालनं।
शुभ विचार के कर–कमलों से,
झरता मन चाहा "संचित धन" ॥ 18 ॥

卐

असीम और अनन्त शक्ति पुँजों को धारण करने वाले उस विराट को कोटियों नमन! बारम्बार नमन!! जिसने विचार शक्ति देकर मानव जीवन को चमत्कृत शक्तियों से युक्त किया। ईश्वर ने मनुष्य को कर्म करने में स्वतंत्र रखा। शुभ विचारों से भरकर एक चमत्कृत मस्तिष्क दिया, जिसने नाना प्रकार के दाँतों तले अँगुली

दबाने वाले कार्य करके संसार को दिखला दिया कि विचार शक्ति ही ईश्वर शक्ति है। ऐसे शुभ संकल्पों वाले मन को दूषित विचारों से भरकर यदि मानव सुखों की कामना करे तो निश्चित ही पशु उससे अच्छे हैं। मनुष्य की शुभ विचार शक्ति लक्ष्मी के वरद हस्तों से सुखदा धन ऐश्वर्य झरता रहता है। जो जानता है, वह सभी सम्पन्नताओं से युक्त रहता है। अतः जागिए– प्रमाद त्यागिए।

शुभ विचार शक्ति को प्राप्त करने का हर प्रयास सराहनीय है। इस अभ्यास में कोई कसर न उठा रखो।

प्रचंड संकल्प सबल, भले विचारों संग।
सर्व गुण सुसम्पन्नता, साहस संग उमंग॥

"विजय में गहरी आस्था विजेता के लिए विजय का शुभ शकुन है !" — *आर. के. शर्मा*

आस्था

(*Loyalty*)

अपने भीतर की अलौकिक अनुभूति को जानने का नाम आस्था है । अपने अन्दर छिपे सत्य के बीज को पहचानने का नाम आस्था है । जब आपके आत्मीय सगे, प्रेम पगे सम्बन्धी बाहर गये हों वह आने के समय न आकर दो चार दिन बाद आएं । तब जो हालत होती है, उस अनुभूति को केवल अश्रु ही अभिव्यक्त करते हैं । वाणी मूक हो जाती है । चाहते हुए भी व्यक्ति कुछ बोल नहीं पाता । प्रेमाश्रु बह बहकर सब कुछ कह देते हैं । क्योंकि आपकी उनमें अतुलनीय आस्था है । जब आप काम से थके हारे, घर लौटते हैं, आपका नन्हा मुन्ना भागकर आपसे चिपट जाता है । क्या हमने विचारा है कि हारे थके भगवान आएं और हम बाल भाव से उनसे चिपट जाएं, वे हमें स्नेह से अंक में ऊठा लें । क्या हमने इतनी आस्था से भगवान को पुकारा है । बिना आस्था ही हम चाहने लगे हैं कि कोई जादू या करिश्मा हो जाए । किसी मंत्र, तंत्र में से सुखों के भण्डार फूट पड़े । अन्धे के हाथ बटेर कभी ही लगती है । कुछ पाने के लिए कुछ तो होमना ही पड़ता है । आस्थावान बनिए, कर्तव्य के प्रति सजग

होइए । लम्बी तानकर मत सोइए । बहुत दूर जाना है । खून को पसीने में ढालना है । परिश्रमी रुधिर ढल-ढल कर जब स्वेद कणों में बदलेगा, वह सच्चे मोतियों में परिवर्तित होकर आपको देगा जीवन की बहुमूल्य थाती । क्योंकि :-

अलौकिक शक्ति के महापुंज हो,
प्रकाश तंत्र के आकर्षण ।
चौंसठ कलाओं के भण्डार,
करो गुण ग्रन्थि का भेदन ।
जो चाहोगे पा जाओगे,
तुम्हें खोजते कंचन, रतन ।
भीतर का ताला खोलो तो,
भरपूर मिलेगा "संचित धन" ॥ 19 ॥

卐

"आहुम् आहुम्" बाजीगर करता
मुख से झरते सिक्के खन खन
जादू बल से चलते देखे,
समय, स्वांस और जल, अग्न ।
अपनी आस्थाओं के खेल,
स्वयं ही खिला रहे अपन ।
स्वयं में स्वयं को ढूंढने से,
बढ़ता स्वयं का "संचित धन" ॥ 20 ॥

卐 卐 卐
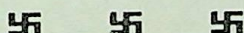
बाजीगर अथवा मदारी को आपने खेल करते हुए

देखा है । वह मुँह से "आहुम् आहुम्" की ध्वनि करता हुआ अपने मुँह में से सिक्के उगलता है । समय, स्वांस, जल और अग्नि को रोकना स्वयं पर आस्था के खेल हैं । अपने आप में अपने आपको ढूंढने से सब कुछ प्राप्त हो सकता है ।

आस्थावान होना साधारण सी बात नहीं है । यह भी मानव की किसी के प्रति एक अलौकिकता है । झाला सरदार ने जब महाराणा प्रताप को चहुं ओर शत्रु-सैनिकों से घिरा जान लिया । उसकी आस्था स्वयं को रोक नहीं पाई । युद्ध भूमि में अपना घोड़ा महाराणा की ओर बढ़ाकर उनका मुकुट स्वयं पहनकर युद्ध करने लगे । स्वांमीभक्ति नें स्वामी को सुरक्षित किया और स्वयं जूझ पड़े साक्षात् मृत्यु स्वरूप सैनिकों से । सरदार ने जान की परवाह न करके स्वयं वीरगति को प्राप्त होकर भी महाराणा प्रताप को प्राणों को रक्षा की । पशु-पक्षियों तक में आस्था का यह चमत्कृत गुण, देखा जा सकता है । स्त्रियां भी आस्था के उदाहरण में पीछे नहीं है । ममतामयी माँ पन्ना धाय तो संसार की अनोखी मिसाल है, जिसने स्वामीभक्ति की वेदी पर अपने सपूत की बलि चढ़ा दी । अडिग सत्य पर जब आस्था बढ़ती है, उन्नति की बेल आकाश चढ़ती है । आस्था और कर्तव्यपरायणता की उज्ज्वलता चिरस्थाई होती है । उसकी याद मानव के मानस पटल से विस्मृत नहीं होती । प्रकृति भी आस्था और कर्तव्य परायणता का गीत गुनगुनाती है ।

परखें हीरे सुकर्म जौहरी,
जंचे जीव मुन्दरी यौवन ।
कर्म क्षेत्र के इस कुरुक्षेत्र में,
मुस्कुराओ जैसे श्रीकृष्ण ।
अच्छाई की ढाल बनाकर,
सुकर्मों की तलवार चले ।
शीष भू लुंठित झूठ कपट के,
अडिग सत्य ही "संचित धन" ॥ 21 ॥

卐

संसार में कुछ लोगों में एक गुण विशेष पाया जाता है, दूसरों की हँसी उड़ाने का गुण। आपका उपहास कोई करता है, करता रहे । यदि आप अपने दृढ़ निश्चय पर अडिग हैं, शनैः शनैः उनकी हँसी दब जाएगी । आपकी संकल्प शक्ति, सुकर्म के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति और कर्त्तव्य के प्रति आस्था के आगे ऐसे उपहासों को नतमस्तक होना पड़ेगा । आस्थामय कार्य सम्पन्न होंगे । यह संसार कर्म क्षेत्र रूपी कुरुक्षेत्र है इसमें कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ते हुए श्री कृष्ण के समान मुस्कुराइए । जहाँ सत्य, पवित्रता और आस्था होते हैं वहाँ परमेश्वर स्वयं कार्यरत होते हैं । असफलता वहाँ से बहुत दूर भागती है । असफलता की क्या हस्ती जो आपके अटल संकल्प के सामने टिक सके ।

आस्थावान के सम्मान पर हरफ़ नहीं आ सकता,
अतः आस्थावान बनिए, विचार वान बनिए ।

दृढ़ भावनाएं प्रस्तर सी,
मन में लिए कर्म अगन ।
श्रम-धन से चमक उठेंगे,
छिपे हुए चिन्गारी कण ।
भाग्य लिखेगी किरण किरण,
तिरोहित होगा तम सघन ।
बूंद बूंद पसीना महकेगा,
बन सच्चे मोती "संचित धन" ॥ 22 ॥

卐

नमन के योग्य हैं वे जो दृढ़ इच्छा शक्ति के स्वामी हैं और अपने कर्त्तव्य के प्रति आस्थावान हैं । पसीने के सच्चे मोती उन्हें हीरे पन्नों से अधिक सुख देते हैं । परिश्रमी तन से निकले स्वेद कण उन्हें प्यारे लगते हैं । आलस्य के खट्टे अँगूर चखना उन्हें पसन्द नहीं । वे परिश्रमी के मधुर फलों में विश्वास रखते हैं । ऐसे ही परिश्रमी और आस्थावान व्यक्ति के परिश्रम से प्रसन्न होकर राजा ने एक बहुमूल्य हीरों की थैली भेंट की । कुछ वर्षों बाद राजा ने उस व्यक्ति को परिश्रम के पसीने से नहाया हुआ खेत में काम करते पाया । राजा रुका और बोला, "तुम वही हो जिसे मैंने थैली भेंट की थी । क्या मेरी दी हुई थैली का धन समाप्त हो गया ? शरीर से पसीने का नाला बह रहा है । हाँफने से तुम्हारा साँस भी उखड़ रहा है ।" भोला किसान बोला, "महाराज उस थैली का धन मैंने उन निर्धनों

में बाँट दिया जो मुझ से भी अधिक निर्धन थे। मैं बिना परिश्रम के नहीं रह सकता महाराज ! इसमें मेरी आस्था है। परिश्रम के बिना मुझे खाना खाना अच्छा नहीं लगता।" राजा निरुत्तर हो गये। उनमें कुछ भाव जाग्रत हुए। वे बोले, "आज से मैं भी अपनी रोटी परिश्रम से कमा कर, पसीना बहाकर खाया करुँगा।"

ऐसे बहुत से राजा भी हमारे देश के सिरमौर रहे हैं जो अपनी रोटी पसीना बहाकर खाना पसन्द करते थे। हमारे राजनेताओं में भी अभी दो-चार जीवित उदाहरण वर्त्तमान हैं। अतः आस्थावान बनिए और परिश्रम में आस्था कीजिए। भीतरी अलौकिक शक्तियों के आनन्द से भरपूर होइए।

सत, पवित्रता, आस्था, सुकर्म-सुधा के पात्र।
सदा सफलता साथ है, भ्रान्ति संशय नात्र॥

"विश्वास को सुदृढ़ करने वाली शक्ति का नाम है कर्त्तव्य परायणता ।" – के. एन. छाबड़ा

कर्तव्य

(Duty)

कर्म क्षेत्र में अपने कर्म पर डट जाना कर्तव्य पालन है । कर्तव्य से हटने और कर्तव्य पर डटने के बीच में दो बातें हैं । मन की दुर्बलता से व्यक्ति कर्तव्य से हट जाता है । मन की सबलता से वह कर्तव्य मार्ग पर डट जाता है । कर्तव्य अनेक हैं और डटने वाला व्यक्ति एक, अतः कर्तव्य पालन में उसे सतर्क और सावधान तो होना ही चाहिए । कर्तव्य चरित्र बल का सम्बल है । सदाचार का सहचर है । नियमित होना और कर्तव्य परायण होना व्यक्ति के व्यक्तित्व में चार चांद लगाता है । उसके व्यक्तित्व का एक अलग ही आकर्षण झलकता है । विजयी-भावना उसके मुखमंडल पर अठखेलियां करती है । क्या आप कर्तव्यपरायण होकर गौरव का अनुभव नहीं करते ? कर्तव्य पूरा करने से जो प्रसन्नता होती है, वह प्रगति के मार्ग प्रशस्त करती है । आप निर्भय हैं, यदि कर्तव्यपरायण हैं । किसी दुःख को देखकर आप कैसे विचलित हो सकते हैं ? कर्तव्य परायण व्यक्ति के आगे दुःख टिक नहीं सकते । अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर अपना कर्तव्य पालन कीजिए । कर्तव्य परायणंता आपके लक्ष्य भेदन हेतु कमान

पर चढ़ा हुआ वह तीर है जो निश्चय ही लक्ष्य-भेदन करता है। यह आपकी पूँजी है, आपका संचित धन है। अत: उसमें किसी प्रकार की कंजूसी किसलिए ? कर्तव्यशील व्यक्ति के प्रयास लक्ष्य भेदन में सफल होते हैं। परिश्रम संजीवनी चाहिए, कर्तव्य पर डटिए। अपने में बार-बार दोहराइए :–

सभी जीवों से श्रेष्ठतर,
सुकर्म हेतु शरीर साधन ।
महानतम सत्ताधारी ने,
दिया सरल मानव-जीवन ।
न फिसले कर से स्वर्णावसर,
उद्‌देश्य सिद्धि न जाए बिखर ।
सुकर्म-सुधा की देन ही तो,
मानव जीवन "संचित धन" ॥ 23 ॥

卐

बुरा नहीं सत्कार्य कोई,
सभी कार्यों में अच्छापन ।
अच्छी भावना, सच्ची साधना,
डट जाने की कर्तव्य-लगन ।
यदि चाहते करें सफलता,
झुक-झुक पल-पल अभिनन्दन ।
कर्तव्य तुम्हारे हीरे मोती,
कर्तव्य तुम्हारा "संचित धन" ॥ 24 ॥

卐

शुभ कर्म कोई भी बुरा नहीं है। अच्छी भावना लिए हुए, सच्ची साधना करते हुए कर्तव्य पर डट जाना चाहिए। सफलता झुक-झुककर अभिनन्दन करने लगती है। कर्तव्य ही वास्तविक "संचित धन" है।

वह जो हाथ पर हाथ धरे बैठा है, अपने हाथों पर अत्याचार कर रहा है। परिश्रमहीन व्यक्ति 'अधमरे' से न्यूनाधिक नहीं है। परिश्रम के जोर में जादू है। कर्तव्य परायणता में जोर है। परिश्रम अपना कलेजा काट कर कर्तव्य परायणता को पालता पोसता है। परिश्रम में लाज और शर्म के लिए स्थान नहीं है। सुकर्म सुधा पीजिए। कर्त्तव्य शील होना ही जीवन को धन्य करना है। जीवन की सार्थकता का दूसरा नाम ही कर्त्तव्य परायणता है।

"सफलता की सुदृढ़ सीढ़ी–कर्त्तव्य परायणता"

कर्म सुधा-स्नान प्राणी के,
मुँह बोले हों अमर वचन।
विजय दुन्दुभि करती कर जोड़,
कर्तव्यशील का नित वन्दन।
तुम्हारे प्रयास के हाथों से,
तय होना है लक्ष्य भेदन।
कर्तव्य परायणता सम्बल,
प्रत्येक लक्ष्य का "संचित धन" ॥ 25 ॥

卐

कर्म-सुधा रसास्वादन कीजिए । अकर्मण्यता का पिण्ड छोड़िए। इस कार्य से निवृत्त होते ही आपका मन परिश्रम करने के लिए गवाही देने लगेगा । आलस्य का दबदबा समाप्त होते ही कर्त्तव्य परायणता हृदय की कोर से झाँकेगी । लक्ष्य भेदन के प्रयास सफल हो सकेंगे। क्यों परवाह करते हो कि अमुक ने अपना कर्त्तव्य नहीं निभाया है ? क्यों सोचते हो कि दूसरों के पास आप से कम उत्तरदायित्व है ? अपने उत्तरदायित्व को सफलता-पूर्वक निर्वहन करने की मोहर अपने पसीने से लगा दीजिए।

संघर्ष बर्र के छत्तों से जब,
भिड़ जाता संकल्पित मन ।
आफत के पीछे बन आफत,
यदि दौड़ता स्वावलम्बन ।
प्रगति के इस मूलमंत्र में,
दिखने लगता जब अपनापन ।
मिल जाता है मन चाहा,
अक्षय कोष निज "संचित धन" ॥26॥

卐

अकर्मण्य व्यक्ति के घर अवगुणों का परिवार आकर बस जाता है । आलस्य, तन्द्रा, निर्धनता चहुँ ओर से आक्रमण करते हैं । व्यक्ति कराह उठता है । संस्कृत में एक कहानी है । रामदास सूर्योदय से पूर्व उठता है । ईश्वर का नाम लेता है । नित्यकर्म से निवृत्त होकर

अपने कर्म क्षेत्र में डट जाता है। वह सम्पन्न और खुशहाल है। इसके विपरीत उसका मित्र धर्मदास दुःखी, विपन्न और निर्धन है। वह बीमार न होते हुए भी बीमार लगता है। युवा होते हुए भी बूढ़ा लगता है। रामदास उसे सिद्धि मंत्र देता है। उस मंत्र से धर्मदास धनी, सम्पन्न और खुशहाल बन जाता है। आप भी स्वयं को जगाइए, सिद्धि मंत्र अपनाइए। सूर्योदय से पूर्व उठकर अपने इष्ट का नाम लीजिए। नित्य कर्म से निवृत्त हो कर्तव्य कीजिए।

सूर्यदेव से पहले उठकर,
कर्मठ भास्कर अभिनन्दन।
खिले सम्पन्नता सूर्य मुखी,
ओज तेज का संवर्द्धन।
नित्य कर्म से निवृत्त, शुद्ध हो,
करें बड़ों के चरण वन्दन।
कर्मशील बन नित्य बटोरें,
खुशहाली का "संचित धन" ॥ 27 ॥

卐

सूर्य देवों के देव हैं। इन्हीं के बलबूते पर यह विश्व गतिमान है। इनका प्रातः दर्शन आयु, बुद्धि, यश और बल का वर्द्धक है। सूर्य की रश्मियों में अद्भुत शक्ति और चमत्कार है। जो लोग प्रातः उठकर सूर्य दर्शन करते हैं, उनके शरीर के बहुत से रोग वैसे ही भाग जाते हैं। सूर्य अपने आप में परम ईश्वर रूप

है । सूर्य दर्शन के गुण एक से एक बढ़कर हैं । याद आती है उन योगी बाबा की बात, जो सूर्य की आराधना और अपनी साधना में लगे रहते हैं । एक बार भक्तों के बीच बैठे वे प्रवचन कर रहे थे । एक भक्त ने लाकर उनको एक ताजा गुलाब भेंट किया । उन्होंने एक यंत्र द्वारा सूर्य रश्मियों का संसर्ग उस गुलाब से कराया । भक्त से पूछा, "कौन सा फूल इसके बदले भेंट करूँ ?" भक्त के मुँह से अचानक गेन्दा शब्द निकल पड़ा । देखते ही देखते वह फूल गेंदा बन गया । एक खिला हुआ तरोताजा गेंदा का फूल ।

सूर्य जगत की आत्मा है । उसका नियमित जीवन हमें नियमित बनाने और सुकर्म पर चलने हेतु प्रेरणा दे रहा है । सम्पन्नता के सूर्य मुखी खिलने लगेंगे । ओज तेज बढ़ेगा । बड़ों के चरण स्पर्श से "सुखी रह" की शब्द-शक्ति प्राप्त करके कर्मशीलता को प्राप्त हो जाओगे और खुशहाली करेगी आपके चरण चुम्बन ।

ओजस तेज बढ़ोतरी, कर्त्तव्यपरायणता।
कर्मशील बन पाइए, संसार सुपात्रता॥

"The way to be nothing is to do nothing."
—Howe

हीन भावना
(Inferiority Complex)

"मैंने आज तक कोई आदमी नहीं देखा, जो प्रतिदिन जल्दी उठता हो, मेहनत करता हो और ईमानदारी से रहता हो, फिर भी दुर्भाग्य की शिकायत करता हो।"
–एडीसन

श्रमशील व्यक्ति के श्रम रूपी पौधे पर सम्पन्नता से सुगन्धित पुष्प खिले हैं। मन में सौंधी-सौंधी सी महक है। हीन भावना इस महक से दूर भागती है। हीनभावना को श्रम की सुगन्धित धूनी नहीं भाती है। इस धूनी की तनिक सी महक से यह अंतर्ध्यान हो जाती है। श्रम की वधू विश्वासों के स्वर्ण कंगन पहनकर निहाल हो जाती है। अतः हीन भावना से मुक्त होइए। विश्वास से युक्त होइए। कर्मक्षेत्र में डटकर अपना बल आंकिए, भीतर की शक्तियों को झांकिए। हीन बनकर दूसरों का मुँह मत ताकिए। इसी प्रकरण पर लिखे ये पद्य हमारे मन में सुख, शान्ति और साहस का संचार करते हैं। गाइए, गुनगुनाइए और स्वयं को जगाइए :–

मजबूत भावना से बनता,
दृढ़ हिमगिरि सा दृढ़ मन।

सच्ची और सुलभ भावना,
पूरे करती संकल्प स्वप्न ।
तुम्हारे आकर्षण के आगे,
फीके जग के आकर्षण ।
शुद्ध भावना भर जीवन में,
उल्लास बटोरो "संचित धन" ॥ 28 ॥

卐

चमत्कार को नमस्कार है,
सदियों पुराना जग-चलन ।
उत्साह अनवरत, सदा कार्य-रत,
वृथा उत्साह हीन जीवन ।
भला उमंगे भी थकती हैं?
करती कठिन कार्य दोहन ।
उल्लास उमंग वरदान बड़ा,
उत्साह सर्वदा "संचित धन" ॥ 29 ॥

卐

चमत्कार को सभी नमस्कार करते हैं । चमत्कार आपके भीतर है । भावनाओं को जितना भी दृढ़ कर पाएँगे, इनमें उतने अधिक संकल्प पूर्ण करने की शक्ति बढ़ेगी । तुम्हारे आकर्षण के आगे संसार के आकर्षण कुछ भी नहीं है । ये संसार के आकर्षण तुम्हारी शक्तियों से आँखें मिलाने की सामर्थ्य नहीं रखते । तुम्हारा उत्साह देखकर इनकी आँखें उलट ज।एँगी । असीम तेज के भण्डार हो तुम । शुद्ध भावना भर कर उठो । धरती

और आकाश के कुलाबों को मिलाने वाली अपनी तेजस्विनी शक्ति को पहचानो।

परा मुखापेक्षी नहीं बनना,
यदि चाहते जीवित जीवन।
जीवित मुर्दा सा वह व्यक्ति,
कर्म विमुख जिसका जीवन।
बूढ़ा हुआ शरीर तो क्या?
ढला कहां मन का यौवन?
फूल खिलाती बंजर भूमि पर,
जवान भावना "संचित धन" ॥ 30 ॥

卐

दूसरों का मुख ताकना और अपने कर्म से विमुख रहना मृतक होने के समान ही है। कर्तव्य परायण व्यक्ति कभी बूढ़ा नहीं होता। बूढ़ा तो शरीर होता है। मन की जवानी अक्षय है। मन की जवान भावना बंजर भूमि में भी फूल खिलाती है। यही भावना मनुष्य का संचित धन है। जिन्होंने दूसरों का मुँह ताक कर आसन जमाया था, उनके आसन उखड़ गये। दूसरे तुमसे आकाश में थेगली लगाने की बात करेंगे लेकिन तुम्हारे फटे कुरते पर नन्हीं सी टुक्की लगाने की सामर्थ्य उनमें नहीं होती। अपने जवान मन को बूढ़ा कहकर अपनी निन्दा क्यों करते हो। उठो! उचक कर परिश्रम के घोड़े पर सवार हो जाओ! परिश्रम के नाम पर यदि तुम्हारी बाछें खिल उठी हैं यदि नस-नस फड़क उठी

है, समझो कि नसीब खुले हैं।

उम्र 75 वाँ वर्ष पार करने को थी शोभाराम की, जब उसके पुत्र ने हल्का सा कहा था, "पिताजी आपकी पेंशन से भी ज्यादा आपके ऊपर खर्च हो जाता है।" न जाने क्या हुआ शोभाराम को, एकान्त कोने में बैठकर फूट-फूट कर रोया था। जल की गंगा न जाने कहाँ से उमड़ी, रुकने का नाम नहीं। बीते दिनों की याद, नन्हें बच्चों को मेहनत से पालना, अपने मुँह से निकाल कर भी बच्चों को देना .... पत्नि की धुँधली स्मृति, ... आसुँओं का जल थामे नहीं थम रहा था। उसकी आत्मा चित्कार उठी। उठ सोभा ! उठ ! नया जीवन शुरू कर। उसने स्वयं को ढ़ाढ़स बँधाया। व्यवस्थित किया। बुढ़ापे का सहारा डण्डा सम्भाला। यह निर्जीव डंडा उसे जीवितों से अच्छा लगा। वह बाहर गया। कई स्थानों पर बात की। बाहर गेट पर बैठने की नौकरी मिली। उसने खुशी-खुशी स्वीकार कर ली। दो चार दिन में डंडा भी छूट गया। उसमें उमंग, उल्लास, उत्साह और जीने की चाह बढ़ गई। लग्न से कार्य किया। मालिक का विश्वास कुछ ही दिनों में जीत लिया। समय बीतता गया। सारे कारोबार की देख-रेख शोभाराम करता है। वह बूढ़ा-जवान अब शान से जीता है। अतः दूसरों की आशा छोड़कर हर साँस अपने भरोसे लीजिए।

लालसा पोटली धर कांधे,
करते हो यह भजन पूजन।
बिना किए सब कुछ पाने को,

लालायित लोभ, लालसा, मन ।
बिना श्रम मौज उड़ाए क्यों,
क्यों वासना प्रोत्साहन ।
स्वेद कणों में रुधिर ढ़ल ढ़ल,
बने शरीर श्रम संचित धन ॥ 31 ॥

卐

मनुष्य की इच्छाएं अनन्त हैं । वह भजन कहाँ करता है । वह तो भगवान के सामने अपनी इच्छाओं का पिटारा खोलकर बैठ जाता है ।

बिना परिश्रम सब कुछ पाने की लालसा मनुष्य को दुःख देती है । खून को पसीना बनाकर दुर्लभ को सुलभ कर लेना ही पुरुषार्थ का कर्तव्य है ।

इन लालसाओं को मन के घर से बाहर निकाल दीजिए । अभी समय है । समय की गाड़ी निकल जाने पर क्या रह जाएगा ? बिना किए कुछ पाना महत्त्वहीन है । पसीने पर कुछ आब आने दीजिए । जीवन को कुछ पाने के लिए अवसर से वंचित न कीजिए ।

"मनुष्य अपनी इच्छाओं का दमन करके सुख प्राप्त कर सकता है, उनकी पूर्ति करके नहीं ।"

— मुनी गणेश वर्णी

श्रम वधू ने यदि पहने हों,
विश्वासों के स्वर्ण कंगन ।
यदि आत्मा विश्वासी है,
चमक उठेंगे प्रयत्न-रत्न ।

तुम्हारे प्रयासों का खेल जगत,
सृष्टि गुण का विश्लेषण ।
विश्वास दृढ़ हो हिमालय सा,
मन चाहा पालो "संचित धन" ॥ 32 ॥

卐

परिश्रम रूपी दुलहन जब विश्वास के कंगन धारण करती है आत्मा में जब विश्वास जागता है । सारे प्रयत्न सफल होने लगते हैं । यह संसार आपके सद्प्रयासों का खेल है । सद्प्रयासों पर चलने वालों की परख अच्छी होती है । उनका पसीना उनसे परिचित होता है । वे हवाओं का रुख मोड़ने का साहस रखते हैं । वे समुद्रों को आदेश देने की क्षमता रखते हैं । ऐसा हिमालय सा दृढ़ विश्वास आपके पास है । निश्चित वह आप ही हैं जिनके पास सब कुछ कर सकने में सामर्थ्यवान शक्तियाँ आने को व्याकुल हो रही हैं ।

जिन्दा रहकर भी मरे हुए के समान कौन है ? इसका उत्तर एक ही हो सकता है, जो परिश्रम नहीं करता ।

– सरदार पटेल

हीन भावना के नाखूनों को,
न काटे शेख चिल्ली–पन ।
बिना वस्त्र स्त्री कहां शोभित,
बिना सामर्थ्य न पौरुषपन ।
जागो पुरुष, जैसे जागे,
किशोर शेर का यौवन ।

सुनो दहाड़ निज भीतर-2
सामर्थ्य संवारे "संचित धन" ॥ 33 ॥

卐

कभी-कभी माता पिता भी बच्चों में हीन भावना की सलवट डाल देते हैं। इसीसे जीवन का सारा आनन्द किरकिरा हो जाता है। गोपू करोड़पति का इकलौता लड़का था। माँ बाप अत्यंत लाड प्यार से हर सुविधा घर पर जुटाते थे। कहीं निकलने तक नहीं देते थे। कुछ भी करने नहीं देते थे। जबरदस्ती ठूँस-ठूँस कर खिलाते थे। किसी नन्हें से दुःख का साया आने पर कई नौकर चाकर खड़े मिलते थे। दुःख क्या है? वह यह जानता था, कि पेट दर्द को ही दुःख कहते हैं क्योंकि अधिक खाने से उसे कभी-कभी होता रहता था। अपने घर को वह सारी दुनिया समझता था और पेट के दर्द को सबसे बड़ा दुःख। ऐसे बच्चों के जीवन में आने वाली परेशानियों का कारण वे माँ बाप होते हैं, जिन्होंने लाड़ को ही सब कुछ मान लिया है।

बच्चों को संसार के संघर्षों से आँखें मिलाना सिखाइए। सद्गुण और अपने सामर्थ्य की दहाड़ को सुनिए और बच्चों को सुनने में मदद कीजिए।

सुदृढ़ भाव धारिए, हीन भाव को काट।
भीतर दहाड़ लगाइए, हे सम्पूर्ण विराट॥

"सफलता चाहने वाले को मन को हर तरफ से हटाकर एकाग्र होना पड़ता है ।।" — आर. के. शर्मा

एकाग्रता

(Concentration)

"एकाग्रता ही आत्म साक्षात्कार की कुंजी है ।"
—डा. सम्पूर्णानन्द

मानव अनेकानेक और अनन्त शक्तियों का विपुल कोष है । जब वह इन शक्तियों की सामर्थ्य को जाने-अनजाने आलस्य, प्रमाद अथवा किसी दुर्बलता शिकार होकर बिखेर देता है, तब दु:ख उसे घेर लेता है । उसकी प्रगति का काम तमाम हो जाता है । ऐसे विकट समय में आवश्यकता होती है, अपनी शक्ति, सामर्थ्य और पुरुषार्थ को टटोलने की । उनका एकत्रीकरण करने की । अपनी समस्त शक्तियों को केन्द्रित करके अपने उद्देश्य की पूर्ति तक उसमें एकाकार होकर बढ़ते जाना ही एकाग्रता है । एक उत्तम खिलाड़ी जब मैदान में उतरता है, उसे सिवाय लक्ष्य-भेदन के और कोई बात याद नहीं रहती । सफलता उसके गले का हार बनती है । जीवन में किसी लक्ष्य का होना और उस लक्ष्य पर एकाग्र होना ही जीवन की सार्थकता है । यही आराधना है । यही सच्ची साधना है जीवन की । जीत के आसार एकाग्रता सुनिश्चित करती है । यदि आप चाहते हैं आगे

जाना, यदि आप चाहते हैं संसार पर छाना। अप
काम में खो जाइए, एकाग्र हो जाइए। लम्बी तान क
सोने वालों को, दिवास्वप्न के विचारों का बोझ रा
दिन ढोने वालों को कभी कुछ भी नहीं मिल सका
अपनी तीर संधान साधना में विघ्न पड़ते देखकर एकलव
ने अर्जुन के पालतु भौंकते कुत्ते का मुख बिना पीड़
पहुँचाए जिस शक्ति द्वारा बन्द कर दिया था, वह उसकी
एकाग्रता ही थी। एकाग्रता और आत्म-विश्वास जहां
है, वहां क्या असम्भव है? महिलाओं को निर्बल और
कोमल माना जाता है। यह भी सोच लिया जाता है
कि कोई साहसिक कार्य महिलाएं नही कर सकतीं।
लेकिन शक्ति, सामर्थ्य और एकाग्रता के बल पर आज
महिलाएं आकाश के विशाल सीने पर वायुयान उड़ा
रही हैं। श्रमसाध्य कठोर एवं साहसिक कार्य महिलाएं
कर रही हैं, जिन्हें देखकर पुरुष दांतों तलें अंगुली दबाता
है। पिछले सन् 1992 में भारत की बेटी कु. सन्तोष
यादव ने अदम्य साहस और एकाग्रता के बल पर
"एवरेस्ट पर्वत शिखर" पर विजय दर्ज कर दी।

एकाग्रता प्रवृत्त करती है उस सबकी प्राप्ति में जो
आपका आस्थापूर्ण लक्ष्य है। जीत की इच्छा रखने वाले
को एकाग्र होना ही पड़ेगा। अभी से, इसी क्षण से
एकाग्र होकर अपने कार्य पर निष्ठापूर्वक लग जाइए
और मनचाही वस्तु पाइए। कविता में एकाग्रता के भाव
को हम इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं गुनगुना सकते
हैं:-

सच्ची लगन एकाग्रता का,
छाया जग में सम्मोहन ।
विचार बली के हाथ यदि,
लग जाए संकल्प का धन ।
हथेली पर सरसों जम जाए,
हरिया जाए वीराना पन ।
सूने मन को शक्ति देता,
एकाग्रता का "संचित धन" ॥ 34 ॥

卐

क्या तुम विजयी होना चाहते हो ? क्या तुम सर्वोत्तम बनना चाहते हो ? क्या तुम्हें सफलता लक्ष्मी चाहिए ? क्या तुम उन्नति शील बनना चाहते हो? इन सबका एक उत्तर है कि बिखराव से मन को हटाकर एकाग्रता संग जोड दीजिए । उपयोगी पुरुष बनने का यही मूल मंत्र है ।

कार्य नहीं है छोटा कोई,
छोटे पड़ जाते निज मन ।
दृढ़भाव कर कमल का दीपक,
भटकतों का पथ प्रदर्शन ।
उर के अर्थ गृह में बसती,
महालक्ष्मी प्रसन्न वदन ।
सबल दृढ़ता का बल संबल,
मन की एकाग्रता "संचित धन" ॥ 35 ॥

卐

कोई कार्य छोटा नहीं है । मन से हीनभावना निकाल कर दृढ़तापूर्वक कर्तव्य का पालन करने वाला दूसरों को भी राह दिखाता है । हृदय के धन भण्डार में प्रसन्न रहने वाली महालक्ष्मी का वास है । मन की दृढ़ता और एकाग्रता निश्चित सफलता के कोष हैं ।

चमत्कार की निधि मिल जाती,
मनोबल बल्ला झटके रन ।
एक-2 दो दो से पिंड छुटे,
भागमभाग से बचता तन ।
चौकों, छक्कों की बरसात,
मोह लेती दर्शक का मन ।
अम्बर गूंजता ताली-ताली,
यदि एकाग्रता "संचित धन" ॥ 36 ॥

卐

एकाग्रता मुख की लाली है । यह व्यक्ति के मनोबल का चमत्कार है। सफलता की 'मास्टर की' है। एकाग्रता की एक ही पुड़िया असफलता और दुःख के बुखार को भगा देती है । व्यक्ति की एकाग्रता को देखते ही पराजय का मुख सूख जाता है । विजय का चेहरा खिल उठता है । खिलाड़ी की एकाग्रता से मनोबल रूपी बल्ला रन झटकने लगता है । दर्शकों की प्रफुल्लता का ठिकाना नहीं रहता । एकाग्रता रूपी संचित धन खिलाड़ी के चेहरे पर विजयश्री का सेहरा बाँध देता है ।

आप में भंडार है इस गुण का । केवल थोड़ा सा

अभ्यास बढ़ाइए और मनचाही थाती पाइए ।

मन चाहा सर्व पाइए, अपना कर गुण दो।
एकाग्रता, अभ्यास से, जो चाहो सो लो॥

"मानवता का सर्वश्रेष्ठ आधार-सदाचार ।"

- नीतिवाक्य

सदाचार

(Good Conduct)

"सुहावने उषाकाल का दर्शन जैसे सुख-दर्शन है, वैसे ही सदाचारी पुरुष के दर्शन का आनन्द होता है ।

सदाचार यानि शोभन आचरण । मानवता इसी आचार पर टिकी हुई है । जीवन की सच्ची पूंजी के दर्शन इसी गुण के द्वारा होते हैं । जिसे आगे बढ़ना है उसे सदाचारी बनना है । मानव का मानव के प्रति सम्मान संजोना है । बड़ों की सद्वाणी का गुंजन अपने भीतर महसूस करना है । बड़ों का आशीर्वाद जीवन का अमृत है । जिसने पिया है, सुख से जिया है । क्योंकि:-

आशीर्वादों की मुट्ठी में,
बन्धे स्थूल सूक्ष्म कारण ।
गुरुओं के आशीष ग्रहण कर,
बने भगवन नन्द-नन्दन ।
बड़े बुजुर्ग मात-पिता गुरु का,
आशीर्वाद है चन्दन वन ।
सुगन्ध रहेगी साथ तुम्हारे,
सुरक्षा हर पल "संचित धन" ॥ 37 ॥

卐

बड़ों का आशीर्वाद सफल जीवन का चमत्कारी मंत्र है । सभी कारण इस मंत्र के आकर्षण में बन्धे हैं । गुरुओं के आशीष से श्रीकृष्ण को ईश्वरत्व प्राप्त है । अपने बड़ों, माता-पिता और गुरुजनों का आशीर्वाद चन्दन वन के समान है । इसकी सुगन्ध आपकी हर पल सुरक्षा करती है । यही वास्तविक संचित धन है ।

सद्गुण और सदाचारों की,
लघु सरिता मानव-जीवन ।
अपने और परायों के हित,
केवल सरल, सहज आचरण ।
पवित्रता अन्तःकरण भावों की,
उभर सद्गुण कहलाएगी ।
निज मन मंथन से कर लें हम,
स्वच्छ आचरण "संचित धन" ॥ 38 ॥

卐

मानव जीवन आपके सदाचारों और अच्छाईयों की एक छोटी सी नदी है । इसमें अपनी बुराईयों का कचरा मत डालिए । अंतःकरण को पवित्र बनाते हुए स्वच्छ आचरण से आप सभी कुछ प्राप्त करने में सक्षम हो सकते हैं ।

आशीषों के वरद हस्त से,
चमक तुम्हारी विजय किरण ।
सफलता-सूर्य दिखलाएगी,
प्रकाशित हों बहुमूल्य रत्न ।

प्राकृतिक गुण धर्मों से वंचित,
करता बड़ों का अवज्ञापन ।
पूज्य तुम्हें हों बड़े बुजुर्ग,
आशीर्वचन हो "संचित धन" ॥ 39 ॥

卐

आचारहीन होना सुकर्मों से हीन होना है । आचार हीनका कहीं कोई सम्मान नहीं होता है । उसका अस्तित्व अस्थिर होता है । अवज्ञाकारी की कहीं कोई पूछ नहीं है । सदाचारी व्यक्ति भीष्म की प्रतिज्ञा के समान सारे उत्तरदायित्वों का निर्वाह प्रसन्नतापूर्वक करता है । वह क्षमाशील, दयालु और करुणामय होता है । वह अन्त:करण को निर्मल बनाने के उत्कृष्ट साधनों में लगा रहता है । वह अच्छी बातों को हृदयंगम करता है । क्षमा और दयालुता उसके स्वाभाविक गुण होते हैं । उसकी करुणा के नीरद लोक में प्रसन्नता रूपी हरियाली फैलाते हैं। सच्चरित्रता सदाचारी के जीवन का बैंक बैलेंस होता है । सच्चरित्र उसकी निधि होती है । अंग्रेजी में एक कहावत है, "If wealth is lost, nothing is lost, if health is lost, some thing is lost, if character is lost every thing is lost."

(धन चला गया, कोई बात नहीं, फिर कमा सकते हो । स्वास्थ्य खराब हुआ, कुछ चला गया, धीरे-धीरे संवार लोगे । लेकिन जिसका चरित्र चला गया, उसका सब कुछ ही नष्ट हो गया ।)

सच्चरित्रता सदाचारी की जीवन के अमूल्य धरोहर है । महाभारत में कहा गया है कि वास्तविक धर्म यह है कि जिन बातों को मनुष्य अपने लिए अच्छा नहीं समझते, दूसरों के साथ भी ऐसी बातें हरगिज न करें । कुछ पद्यों में सदाचार को दर्शाने के प्रयास को देखिए :-

व्यस्तता के उत्तरदायित्वों का,
होता रहे सदा निर्वहन ।
निभ जाती ज्यों कोई प्रतिज्ञा,
पूर्ण हो जाते यथा वचन ।
शत्रु की भूल सको शत्रुता,
ऐसा भी कुछ करें यत्न ।
दया, क्षमा सर्वोत्तम गुण हैं,
सदाचार के "संचित धन" ॥ 40 ॥

卐

अपने उत्तरदायित्व को निबाहने और कर्मक्षेत्र की व्यस्तताओं में लगे रहने से मनुष्य की प्रतिज्ञा भी निभ जाती है । कहे वचन पूरे होते हैं । शत्रु की शत्रुता को भूलकर अपने भीतर दया और क्षमा के सद्गुण विकसित करने चाहिएँ । इन्हीं गुणों की खान मनुष्य सदाचारी कहलाता है । निर्भयता, धीरज, विनयशील होना, क्षमाशील होना सदाचार के सद्गुण हैं ।

नियमित जीवन व्यतीत करना, संयम और सादगी से रहना सदाचारी के लक्षण हैं । इन गुणों से युक्त पुरुषार्थी के लिए संसार में कुछ भी प्राप्त करना असम्भव नहीं ।

"The tolerance of religions is a law of nature, stamped on the hearts of all men."

— Voltair

सहिष्णुता

(Tolerance)

सभी धर्मों की सहिष्णुता प्रकृति का कानून है, जो सभी मनुष्यों के हृदय पर अंकित है ।

– वॉल्टेयर

भ्रातृ भाव के समीर से,
जीवित है भारत दर्शन ।
सौंधी सी महकी वायु में,
जीवित भाई-चारे सु-मन ।
कण-कण में भगवान हमें,
दिखा रहा है निज दर्शन ।
भारत के एक एक जन का,
दिव्य सहिष्णुता 'संचित धन' ॥ 41 ॥

卐

इन सभी गुणों का समावेश मानव में, उसके गुणों में एक आनन्ददायक निखार ला देता है । इन गुणों का आंशिक प्रयोग ही मनुष्य को बहुत कुछ दिला देता है । किन्तु मनुष्य अपने तक ही सीमित रहकर यदि इन्द्र का राज्य भी पाले और उसमें सहिष्णुता न हो

तो भी स्वप्न संकल्प अपूर्ण है। भाई-चारा, विश्व बन्धुत्व आपमें एक अलौकिकता लाता है। सभी में स्वयं को देखना, स्वयं में सबको देखना एक अति भव्य व्यक्तित्व का कार्य है। यह कार्य आपके लिए असम्भव बिल्कुल भी नहीं।

गुण अवगुण के भाव परखकर,
बरत रहे हैं गुण, अवगुण।
गुणी होते हैं, ग्राहक गुण के।
अवगुण से जा मिलें अवगुण,
पास खड़ा है सत्य तुम्हारे,
जगो जगाओ अपने गुण।
गुण से गुणाकर बढ़ता है,
गुण भंडार का 'संचित धन' ॥ 42 ॥

卐

उज्ज्वल भविष्य प्रतीक्षारत है। गुणों को गुणों से गुणा करते हुए गुणों को कई गुणा बढ़ाना है। सदाचार सहोदर धैर्य को साथ ले लीजिए और लग्न से कार्यों के पूर्ण होने के प्रयास में एकाग्र मन को लगा दीजिए। ध्यान दीजिए कि धन से आप संसार की सभी वस्तुओं की खरीदारी कर सकते हैं, लेकिन गुण किसी बाजार में नहीं बिकते। गुण अमूल्य हैं, जो आपके पास हैं। इन्हीं के सहारे आप का प्रभुत्व अद्वितीय वस्तुओं पर हो सकता है। अतः गुणों का भुगतान कीजिए, गुणों को चमकाइए और गुणियों में सर्वश्रेष्ठ कहलाते हुए जो चाहें सो पायें।

सत्पथ उगी लताओं से,
कर विच्छेद स्नेह-बन्धन ।
लोगे क्या मानव मेले में,
खड़े असत्य संग उत्पीड़न ।
करुणा की पात्री भौतिकता,
क्या देगी शांत जीवन ?
उर क्षेत्र में दया उगाओ,
लुटाओ करुणा 'संचित धन' ॥ 43 ॥

卐

संसार में इतना बहुमूल्य कुछ भी नहीं, जितना व्यक्ति का सदाचरण । सदाचारी-व्यक्ति गुणों का कोष होता है । वह प्रभु पर अनन्य विश्वास और अटूट श्रद्धा रखने वाला होता है । उसके कार्यों का सम्पन्न करने का उत्तरदायित्व परमात्मा स्वयं अपने ऊपर लेते हैं । सदाचारी व्यक्ति में दो गुण तो स्वयमेव धारण हो जाते हैं । अपने दुःख को सुख मानकर झेलना, दूसरे के दुःख को अपना दुःख समझकर अपने ऊपर झेलना । अपने ऊपर दुःख आने पर वह विचलित नहीं होता । विघ्न-बाधाओं को देखकर उसका साहस और हौसले कम नहीं होते । वह हंसते मुस्कुराते सारे दुःखों को चुपचाप झेलता रहता है । दूसरे के दुःखों को देखकर वह द्रवित हो जाता है । दुखियों की सहायता हेतु वह प्राणपण से जुट़ जाता है । हमारे लिए यही सर्वोत्तम है कि हम दुराचार रूपी कांटों वाले वृक्षों से अपने आपको

दूर रखें। सदाचार के कल्पवृक्ष की छाया में आनन्द खोजें। जीवन की सच्ची सुख शान्ति हमें पहचान कर अवश्य तलाश लेगी। सदाचार के तेजस्वी रूप के आकर्षण में बंधी शान्ति और सफलता लक्ष्मी सदाचारी के अभिनन्दन की सामग्री लिए स्वागत हेतु तत्पर रहती है। कविता में इन शब्दों को कुछ इस प्रकार से बांधा जा सकता है :-

सदाचार-धन के यौवन का,
अति अलौकिक रूपाकर्षण।
मुख मंडल पर लिए उल्लास,
रम जाते हैं उछाह लगन।
एक अनुपम तेज भासता,
तन द्युति उफनती उफन उफन।
सुखद शीतलता का रस सरस,
सदाचार का 'संचित धन' ॥ 44 ॥

卐

सदाचार अमूल्य धन है। इसके यौवन का आकर्षण अलौकिक है सदाचारी के हृदय में हर क्षण प्रसन्नता के भाव रहते हैं। मुख मंडल पर तेज भासता है। उत्साह और लग्न उसे पल पल सुकर्म की ओर प्रेरित करते हैं। तन का तेज सबकी आँखों को प्रसन्नता देता है। सदाचार सुखों की खान है। यह ही जीवन का वास्तविक संचित धन है।

सदाचार महाबलियों का बल है। भारत और भारतीय

संस्कृति का विश्व में इसी के कारण उच्च स्थान है। महापुरुषों की वाणी आज भी विश्व में भारत का नाम ऊँचा किए हुए है। अभाव सदाचारी से दूर भागते हैं। सदाचार से ही जन्मों के पुण्य जागते हैं।

फंसे प्रेम में चरित्रवान के,
सफलता, विश्वास सृजन।
संग डोलते बनकर दास,
प्रेम सुधा पी जीते गुण।
सभी जड़ियों की एक जड़ी,
शुद्ध पवित्र हो चाल चलन।
उन्नतिशील की उन्नति का,
चरित्र बल साधन 'संचित धन' ॥ 45 ॥

卐

सदाचारी और चरित्रवान व्यक्ति का प्रेम अलौकिक और सच्चा होता है। सफलता और विश्वास सदाचारी व्यक्ति के प्रेम के भक्त बन जाते हैं। शुद्ध पवित्र आचरण अमर बूटी के समान चमत्कारी है। चरित्रवान व्यक्ति के प्रेम की शक्ति सब गुणों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। आप चरित्रवान हैं, यही आपकी उन्नति का रहस्य है। हर सम्भव प्रयासों से चरित्र की रक्षा कीजिए, गुणों को प्रसन्नता पूर्वक अपनाइए और हर सुख सम्पदा पाइए।

"सद्भावना विशाल होती है, सत्कार्य रूपी अमृत प्राणियों में बाँटती है।"

"दुर्भावना अपने जहर का आधा भाग स्वयं पीती है।"

- धर्माधिकारी

सदाचारिणी आध्यात्मिकता

(*Spirituality*)

शत्रु को भला कौन पाला करता है ? क्या भयंकर विषधर को दूध पिलाने से विष का और अधिक संवर्द्धन नहीं होगा। क्या विरोधी गिड़गिड़ाने और दया की भीख मांगने से अपना विरोध भूलकर हमें गले लगाएगा ? क्या पैरों में मन-मन के पत्थर बांधकर कोई नदी पार कर सका है ? कदापि नहीं। उसी प्रकार दुराचरण से यदि किसी ने सुख की आशा बांधी हो तो वह अवश्य भयंकर भूल पर है, भटकाव के अटकाव पर अटका है। क्योंकि सदाचार संगिनी आध्यात्मिका के नयन जब भौतिकवाद से मिलते हैं, लोक लज्जा समाप्त हो जाती है और मोहरें लुट जाती हैं, कोयलों पर मोहर लगने लगती है। तब कविता स्वयं चित्कार उठती है-

हमने शत्रु पाले हैं स्वयं,
शत्रु हमारे दुराचरण।
मनो विकारों को जल देकर,
इन पौधों का किया सिंचन।
छल, कपट, झूठ, दुराग्रह, द्वेष,
बुराई, दुष्टता, आवारापन।

इन्हें मन-मीत बना बैठे,
समझ जीत का 'संचित धन' ॥ 46 ॥

卐

सदाचार-संगिनी आध्यात्मिकता के,
भौतिकवाद से मिले नयन ।
लोक, लाज, मर्यादा त्यागी,
आसक्ति के बढ़े चरण ।
हीरक हार लुटे शान्ति के,
इधर जीवन न उधर मरण ।
लुटा धोबी के कुत्ते सा,
घर घाट का 'संचित धन' ॥ 47 ॥

卐

यह धर्म की ज्ञान-शून्यता है, जो भटकाव के अनेक पड़ावों पर लाकर भी मनुष्य को बार-बार भटकाती है। व्यक्ति बिना सोचे विचारे स्वेच्छाचारिता के आंगन में स्वच्छंद होकर घूमता हुआ सुख समझ बैठता है । थोड़ी देर के बाद पछताता है । वह थोड़ी देर ही पापों का विशाल ढ़ेर बनकर उसका पीछा करती है । अत: जागरूक होना, सदाचारी बनना दु:ख के बोझ का बोरा ढोते हुए जीने से हर प्रकार से बेहतर है ।

एक मस्त स्वभाव का अल्हड़ व्यक्ति कबाड़ में से चुन-चुनकर कबाड़ का बोरा कबाड़ी की दुकान पर ले जाता था । कबाड़ी दिनभर के इस परिश्रम के बदले उसे एक रुपया देकर इसके पसीने के बहुमूल्य मोतियों

की कीमत चुका देता था । आज भी वह कबाड़ का बोरा भरकर पसीने से लथपथ, चिलचिलाती भीषण धूप में उस दुःख के भार को ढ़ोता हुआ जंगल से गुजर रहा था । हाँफते प्राणों की दुर्गति के कारण चलना असह्य हो रहा था । छायादार पेड़ देखकर वह रुका, बोरा पटक दिया और छाया में बैठकर अपने श्वांस की गति पर नियंत्रण किया । जब उसने ऊपर देखा, पेड़ पर चार फल लगे हुए दिखाई पड़े । उसने सोचा कि जितना धन कबाड़ी देगा । उतने से ज्यादा मूल्य में ये फल मिलते हैं । उसके अल्हड़पन ने पेड़ से प्रार्थना की, "हे पेड़ तुम्हें अपने दर्द सुनाता हूँ । इन्सान नहीं सुनता, वह बहरा हो गया है । मेरा शरीर टूट रहा है । मेरे दुःखों को हर ले ।" कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगा । कातर और विह्वल होकर जब व्यक्ति प्रार्थना करता है, पूर्ण समर्पित होता है । तब अवश्य चमत्कार होता है । चमत्कार हुआ । एक व्यक्ति वहाँ से गुजरता हुआ, जिसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था, उससे प्रार्थना करने लगा । गिड़गिड़ाने लगा । बोला– "दो चोर मेरे धन के पीछे पड़े हैं, मुझे उनसे बचा लो", उसने उसका बचाव किया और थोड़ी सी प्रार्थना का चमत्कार देखा कि उसी दिन से सेठ ने उसे अपना अंगरक्षक नियुक्त किया । प्रार्थना में कितनी शक्ति है । शुद्ध सदाचार में कितना बल है, यह किसी से छिपा तथ्य नहीं है। उस परमपिता के बहुत बड़े कान हैं, जब आदमी तल्लीन होकर आर्त्त-नाद करता है, तत्क्षण

उसके दु:ख दूर होते हैं । जब इस प्रकार की कविता हम बार बार दोहराते हैं, तब हमें आनन्द और बल दोनों मिलते हैं ।

घायल मन औ दु:खित आत्मा,
जब करते ईश्वर वन्दन ।
चमत्कार अवश्य होता है,
पा लेता सुख शान्ति मन ।
प्रार्थना - शक्ति पहचानो,
बारम्बार करो वन्दन ।
पशु तो है बेबस बेचारा,
कैसे कर ले 'संचित धन' ॥ 48 ॥

卐

स्पष्ट, स्वच्छ चांदनी, सदाचारी ज्योत।
मूलमंत्र सदाचरण, सच्चा जीवन स्त्रोत॥

"जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है।"

-बी. एस. अग्रवाल

भारत संस्कृति

(Indian Culture)

"किसी राष्ट्र को खुशहाल बनाने वाली पूँजी को संस्कृति कहते हैं।"

कातरता, तल्लीनता से,
सुनता है प्रभु, कहे वचन।
विचार व्याप्त है ईथर-2,
चप्पा चप्पा प्रति कण-2।
बुरी बात मन आई भी,
सुन लेते हैं इनके श्रवण।
इसलिए सद्‌विचारों वाला,
बने हृदय निज 'संचित धन' ॥ 49 ॥

卐

(कातरता और तल्लीनता से की गई प्रार्थना को सुन कर प्रभु अभीष्ट की प्राप्ति कराते हैं। विचार बड़ा शक्तिशाली होता है। वह ईथर के द्वारा कण-कण में व्याप्त होता है। मन में यदि कोई बुरा विचार आता है, वह ईश्वर को मालूम रहता है। इसलिए इस मन को सद्‌विचारों से युक्त बनकर ही मन इच्छित धन की प्राप्ति हो सकती है।)

यद्यपि वही पुरातन संस्कृति है, वही पुरातन गुण हैं। इन्हीं गुणों में हमारा मन रमता है। वही सब रंग हैं, वही पुरातन चली आ रही गुणों की सौंधी सौंधी सुगन्ध है। महापुरुषों की ज्योति से चमकता वही ज्ञान है। फिर भी उस दिव्य अलौकिक ज्ञान से उत्तम कुछ नहीं है। स्पष्ट है कि यही संस्कृति, शोभन विचार और सद्गुण मनुष्य को समृद्ध, उन्नतिशील बनाने वाली चमत्कारिक शक्तियाँ हैं। इसके विपरीत दुर्गुणों को भी बहुत लोगों ने अजमाया है, लेकिन यह निर्विवाद सत्य है कि दुर्गुणी व्यक्ति आगे-पीछे अवश्य ही पछताया है। इसलिए उठिए! दुर्गुण को छोड़िए-सदगुणों से नाता जोड़िए। आज दुर्गुणों ने जिन गुणों का दिवाला पीटा है, जो गुण मन मसोस कर रह गये हैं, जिन गुणों के हृदय के फफोले फूटे हैं, जिन गुणों को पैरों तले रौंद कर मनुष्य दुःखों के पहाड़ ढो रहा है, आइए उन सभी गुणों को गले लगाइए और पाइए वह सब जिसकी चाह है।

भारत संस्कृति के हृदय कोष में,
त्याग भावना अनुशासन।
पादप जैसे जन जन हित,
बिता देते हैं निज जीवन।
पशु पक्षी से मानव तक,
सर्वभूत हित बूटा बन।
निज दोने में भरते पत्ते,
ओस अश्रु का 'संचित धन' ॥ 50 ॥

卐 卐 卐

(भारतीय संस्कृति का कोष विशाल है। इसकी त्याग भावना और अनुशासन मानव की उन्नति का सार है। वृक्ष प्राणियों के हित में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। पशु, पक्षियों और मनुष्यों के हित का हेतु बनकर ही वृक्ष प्राण धारण करते हैं। यहाँ तक कि पत्ते ओस रूपी आँसुओं को पीकर प्रकृति का हित करते हैं।)

शील होनहार और अध्ययनशील था। गुरुजनों की संगति करता और अच्छी बातों को जीवन में ढ़ालने का प्रयास करता था। उसका मित्र दुर्जन उसकी इन बातों से चिढ़ता था, फिर भी वे साथ रहते थे। शील उसे बहुत समझाता था। गुरुजन उसे सही राह पर चलने का उपदेश दे देकर थक चुके थे। दुर्जन टस से मस न हुआ। दुर्गुणों के साये उसे घेरते रहे। कुसंग का ज्वर उसके रोम-रोम में रम गया। दुर्गुणों का सरसाम हो गया। दुर्जन वहाँ से भाग निकला। सद्गुणों के खाते में एक भी गुण नहीं बचा था। दुर्गुणों का खाता भर गया था। आगे लिखने का स्थान शेष नहीं था। बस बुराई का अंत बाकी था। आखिर पुलिस ने धर दबोचा उसको उसके अपराधों सहित।

पंद्रह वर्ष बीत गये। एक दिन एक बड़ा पुलिस आफीसर कार से उतरा। एक फटे हाल व्यक्ति को पकड़ा। कार में बिठाया। घर लाया। यह आफीसर शील था। दुर्जन भी पहचान गया। एक मित्र की सन्मित्रता देखकर निर्मल प्रेम गंगा की धारा आँखों के रास्ते बह निकली। गला रुँध गया। मित्रों का मौन

और पवित्र जल धारा ने 15 वर्षों का इतिहास कह डाला ।

"शील ! जो तुमने 20 वर्ष पहले प्रारम्भ किया था, मैं आज से प्रारम्भ करूँगा यानि 20 वर्ष बाद ।" दुर्जन ने कहा ।

"इसी में जीवन की सार्थकता है ।" शील के शब्द थे ।

अनुभव, उपदेशों के मोती,
लुटाते सम्मानित गुरुजन ।
भर लूं झोली, कर लूं संचय,
प्रकृति के अमनोल रतन ।
खिलते फूलों सा वरद हस्त,
शुद्ध पवित्र ध्यान आचरण ।
महकाने वाली जग आंगन,
सम्यक् दृष्टि 'संचित धन' ॥ 51 ॥

卐

जगत का सबसे बड़ा बल, ओज सदाचार में व्याप्त है । अपने मनुष्य होने और मनुज कहलाने का श्रेय केवल सदाचारी को मिलता है । सारे संसार के सुखों की लीला सदाचार पर टिकी है । इस जीवन शक्ति में जब सदाचार रूपी विद्युत का प्रवाह होता है, व्यक्ति ज्ञान भण्डार से प्रकाशित होता हुआ वह सब प्राप्त कर लेता है, जो उसके लिए आवश्यक और संसार के लिए कल्याणकारी है । अच्छा और शोभन आचरण मनुष्य को

क्या नहीं दिला सकता। कर्तव्य निष्ठा, धर्म निष्ठा, अलौकिक शक्तियों की प्राप्ति सभी कुछ सदाचार पर निर्भर हैं। अपने अन्तर में जन-जन की भलाई खोजना अपने सुखों के द्वार खोलना है। अन्तर से दुर्विचार हटाइए। सद्विचार अपनाइए।

गुण-अंगूरों से लदी लता हो,
लिए हरियाली वन-सघन।
असीम शक्ति के धनी लाल हो,
कर सकते हो कार्य गहन।
कहां ढूंढते निज परछाईं,
वन-वन उपवन उपवन में,
जगो, टटोलो अपने उर में,
कार्य निष्ठा का 'संचित धन' ॥ 52 ॥

卐

(जिस प्रकार अंगूरों के गुच्छों से लदी हुई बेल की हरियाली और फल-सम्पन्नता सब की आँखों को एक सुखद आनन्द की अनुभूति देती है, उसी प्रकार गुणवान मनुष्य भी सबके लिए सुख-दर्शन होता है। उसे देखकर संसार प्रसन्न होता है। आप असीम शक्ति से सम्पन्न हैं। बड़े से बड़े दुस्तर और कठिन कार्य करने की सामर्थ्य आपमें है। लक्ष्य से ओझल रहकर क्या कोई लक्ष्य भेदन कर पाया है? इसलिए जागिए। अपने हृदय को टटोलिए। कार्य निष्ठा ही संचित धन है। कार्य के प्रति निष्ठावान होना ही प्रगति पथ की

ओर बढ़ना है ।)

वय छीन प्रभु दुराचार की,
हो अरिष्टासुर मान मर्दन ।
हे जग पालक ! हे संहारक,
फले बेल अब सदाचरण ।
कृपा दृष्टि की तव एक किरण,
महक महक महके उपवन ।
दया सिन्धु हर कली, सुमन,
पाए सुख शान्ति 'संचित धन' ॥ 53 ॥

卐

सत्यानाश हो इस दुराचरण का, जिसने लोगों पर बहुत सितम ढाए हैं । जिस व्यक्ति में भी यह प्रविष्ट हुआ, उसको समूल नष्ट करके छोड़ा । रावण, कंस, दुर्योधन, अनेक असुर, दैत्य इसके पुरातन उदाहरण हैं । वे राजा, नवाब जो दुराचरण में लिप्त रहने के कारण देश को गुलाम बनाने में, प्रजा के कष्टों की वृद्धि में सहायक बने, मध्यकालीन उदाहरण हैं । आज के जीते जागते उदाहरण दुराचरण के कारण अज्ञानान्धकार के गहन समुद्र में दुःख के गोते खा रहे हैं । प्रभु इस दुराचरण दैत्य की उम्र छीन ले । इस अरिष्टासुर का मान मर्दन कर । अब सदाचरण की हरी भरी सुगन्धित पुष्प प्रदायिनी बेल को फलने फूलने दो । आपकी कृपा दृष्टि की कोर से असम्भव भी सम्भव हो जाता है । वीरान, सुनसान नन्दन वन सा महकने

लगता है। हे दया के सागर हर कली, पुष्प को सुख शान्ति का संचित धन दीजिए।

दुराचरण के पास अपकीर्ति, अपयश स्वयं पहुँच जाते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह के साथ भ्रष्टाचार रूपी दुराचार नहले पर दहला है। इसका रूप बड़ा रूपहला है। जल्दी ही इसका पेट निकल आता है। अच्छाईयों के ग्रास बनाकर बड़े बड़े पुलों, भवनों, शिक्षण संस्थाओं को उदरस्थ कर लेता है। इससे बचिए, भले ही भूखों मरने की नौबत आ जाए। इसका फोड़ा पकने पर असहनीय दुःख देता है। व्यक्ति पछाड़ खाकर मुँह के बल चारों खाने चित्त गिरता है। अपने जीवन की कार्य शैली पर पछताता है।

हृदय बना है तप्त मरुस्थल,
शुष्क कल्पनाओं के सु-मन।
तरु तले मूर्छित हाँफे छाया,
है असह्य गर्मी की तपन।
हो जाएं आदेशित मेघ सजल,
पाएं पशु, पक्षी, जन जीवन।
तेरी करुणा के नीरद ही,
लोक हरियाली के 'संचित धन' ॥ 54 ॥

卐

(हृदय असह्य दुःख रूपी भीषण गर्मी की तपन से रेगिस्तान जैसा जल रहा है। सूखी-सूखी कल्पनाओं से हरे भरे मन भी मुरझा गये हैं। पीड़ा रूपी गर्मी इतना

बढ़ गयी है कि वृक्ष की छाया मूर्छा को प्राप्त होकर पेड़ के नीचे बेहोश पड़ी है। हे प्रभु ! हे विराट ! सुख के सजल मेघों को यदि आप आदेश दें तो पशु पक्षियों को भी जीवन दान मिले। आप करुणामय हैं। आपकी करुणा के बादल ही आकाश में छाकर इस संसार में प्रसन्नता की हरियाली करते हैं।

प्रभु ! हे दया के निकेत ! संसार से जो कुछ पल्ले पड़ा, सब क्षण-भंगुर निकला। कामना के बाल देव को स्नेह से पाला पोसा, इसको कसरती पहलवान बनाया। इस संसार ते अखाड़े में यह मेरी ही टाँग खींचे फिर रहा है। कहकर वह सुबकने लगा। आँसुओं से स्वयं को नहलाने लगा। उसे लगा, सामने से प्रकाश का गोला चला आ रहा है। ईश्वर प्रकट हो गये। बोले, "माँग क्या माँगता है।" उसने चरण पकड़े-पकड़े कहा, "प्रभु माँगना भी तो कामना है, जो देना है आप स्वयं दीजिए। मेरा मार्ग-दर्शन कीजिए।" प्रभु बोले, "सब झँझटों को छोड़ सदाचार के गुणों को अपना ले, बिना कामना ही पाने योग्य सब कुछ पाले।" उसने इधर-उधर देखा। कामना का देव भाग चुका था। अब वह जाग चुका था। आप भी जागिए। कामना त्यागिए।

कामना का त्याग ही, बहुत बड़ी है जीत।
जीती जिसने कामना, सब गुण उसके मीत॥

"No pain, no palm; no thorns, no throne; no (Gall) no glory; No cross, no crown."

—Penn

अनुशासन

(Discipline)

शुद्ध अन्तःकरण से प्रेरित होकर नियम धर्मों में आस्था रखते हुए सभी मानमर्यादाओं का पालन अनुशासन है।

अनुशासनहीनता के करने से हर सुअवसर फिसलते देखे गये हैं। सुख प्राप्ति की कल्पना तो मूर्ख भी विद्वान से अच्छी कर लेता है और पा भी सब कुछ लेता है, लेकिन स्वप्न में। जब यथार्थ सामने खड़ा होता है, वही व्यथाएं, वही पीड़ाएं, वही दुःख वही क्लेश मनुष्य अपने समक्ष साक्षात डटे हुए पाता है। उन सबकी निवृत्ति का मार्ग केवल एक है–वह है कर्मठता। कर्मठ व्यक्ति के हाथों में अनुशासन रूपी मशाल होती है। यह मशाल मार्ग की तमाम बाधाओं, ऊबड़ खाबड़ राहों के कंकर, कांटों को प्रकाश की स्वर्ण रेखा बनकर हमें कुमार्ग से हटाती और सरल मार्ग से सुखों की ओर ले चलती है। अनुशासनशीलता मनोव्यथा की शत्रु है। अनुशासनप्रिय व्यक्ति से व्यथाएं दूर भागती है। अनुशासन हाथ की पहुँच में आ सकने वाली, पौधे की महकते, खिले फूलों वाली वह टहनी

है, जिसका स्पर्श सुख देता है, जिसकी वास सुवास प्रफुल्लता देती है ।

अनुशासित नागरिकों से घर सुव्यवस्थित और सम्पन्न तथा राष्ट्र सुदृढ़ होता है । अंग्रेजी में एक अति सुन्दर परिभाषा है-

"Wise men preach discipline, great men practice it, while fools defy it."

"बुद्धिमान लोग अनुशासन पर उपदेश करते हैं । महान पुरुष अनुशासन का अभ्यास करते हैं, जबकि मूर्ख अनुशासन का अनादर करते हैं ।"

हमारी प्रगति के फूल जिस पौधे पर लगते हैं, समाज की भलाई का बीज भी वही है और वह है आत्म-अनुशासन । प्रकृति की समस्त वस्तुएं एक दूसरे के आकर्षण और अनुशासनपूर्वक अपने कार्यों का सम्पादन और संचालन करते रहते हैं ।

आप स्वयं सोचिए, जिस परिवार के सदस्य अपने प्रधान की बात न मानते हों, क्या वह खुशहाल रह सकता है । क्या उनके घर में शान्ति सम्पन्नता का वास सम्भव है ? जीवन के हर क्षेत्र में सम्पन्नता, खुशहाली और विजय वरण हेतु अनुशासन रूपी सेनापति की उपस्थिति अनिवार्य और आवश्यक है । ज्ञान दीप को प्रज्वलित करके अनुशासन हीनता के जंगल को नन्दन वन बनाने का बीड़ा उठाइए और अपने चहुं ओर खुशहाली पाइए:-

ज्ञान ज्योति रहे सदा आलोकित,
छोड़ सभी के आन्दोलन ।
पल पल अपने ज्ञान दीप को,
करता रहे प्रज्ज्वलित मन ।
अनुशासनहीनता के वन को,
बना सकोगे नन्दन-वन ।
ध्यान एकाग्रता के संग-संग,
बने अनुशासन 'संचित धन' ॥ 55 ॥

卐

(यदि ज्ञान की मशाल आलोकित है । यदि हृदय में ज्ञान का प्रकाश है, हर क्षण आप उसकी सार सम्भाल में लगे हुए हैं तो आप निश्चय ही अनुशासन हीनता के अन्धकार को हटा कर अनुशासन का प्रकाश फैलाने में सक्षम हो सकोगे । ध्यान एकाग्रता के साथ-साथ जिसके पास अनुशासन का संचित धन होता है, वह स्वयं बढ़ते हुए दूसरों को राह दिखाता है ।)

एक गरीबी के मारे शिल्पी को भूख ने मार मार कर अधमरा कर दिया । कई दिनों से कोई काम नहीं था । इसलिए न समय पर उठना न समय पर खाना-सोना । सब कुछ असमय । कोई नियम धर्म नहीं । दिन भर फालतू विचार उसके मस्तिष्क पर चील, कौवों से मँड़राते थे । एक दिन इन सब बातों से ऊब कर उसने प्रतिदिन के लिए एक अनुशासित नियमित दिनचर्या बनाकर संकल्प किया कि प्रतिदिन नियम पर चलूँगा । वह प्रातः जागा और नित्य चर्या से निवृत्त होकर मंदिर

में गया। जब वह मूर्ति के सामने नत मस्तक हुआ, उसने देखा कि मूर्ति जरा सी खंडित है। उसने पुजारी से कहा। पुजारी बोला, "हमारे सेठ कई दिन से एक कुशल शिल्पी को ढूँढ रहे हैं तथा कई और भी नई मूर्तियाँ निर्मित होनी हैं।" शिल्पी ने अपना परिचय दिया। उसे काम मिल गया। शिल्पी के भाग्य खुल गये थे। उसी दिन से उसने नियमितता, अनुशासन और सदाचारी होने का व्रत ले लिया। वह नियमित जीवन का रहस्य जान चुका था।

विचार अमावस बन जाएंगे,
भंग हुआ यदि अनुशासन।
इसी नियम में रवि चन्द्र बंधे,
इसीलिए टिम्-टिम तारागण।
नियम बद्ध है प्रकृति सारी,
करें अवश्य नियम पालन।
सफलता चरण पखारेगी,
ढले अनुशासन 'संचित धन' ॥ 56 ॥

卐

सभी ने जन्मान्ध भिखारिन अमावस के अन्धकार को देखा है। अनुशासन के भंग होने से विचार अमावस जैसे बन जाते हैं। सूर्य और चन्द्र नियम में बँधे हुए हैं। तारागण अपने नियम से टिमटिमाते हैं, अर्थात नियम और अनुशासन जीवन में सर्वोपरि हैं। अनियमित, अनुशासन हीन और कर्म हीन व्यक्ति से प्रकृति अप्रसन्न

होती है। इसलिए कुछ पाने के लिए लालायित होने से पहले कुछ करने के लिए तैयार होइए। नियम पालन कीजिए। जिसके पास अनुशासन रूपी संचित धन है, सफलता ने हमेशा उसके चरण पखारे हैं।

अंधकार में बिना विद्युत के,
वृथा हमारे घर आंगन।
बिना कुतुब नुमा ते जैसे,
दिशाहीन युद्ध पोत भ्रमण।
सेनापति विहीन सेना का,
बिखर जाता सब संचालन।
अनुशासन हीनता के कर से,
फिसला जाता सब 'संचित धन' ॥ 57 ॥

卐

(जब बिजली चली जाती है, रात्रि में उस समय घर-आँगन की दशा विचित्र हो जाती है। हाथ को हाथ नहीं सूझता। मुँह में जाने वाला ग्रास नाक में जा लगता है। एक वस्तु को उठाने के चक्कर में दूसरी गिर जाती है। ठीक उसी प्रकार से अनुशासनहीन जीवन में बिखराव उत्पन्न होता है। आप विद्युत को ही लीजिए। पाँच मिनट बिना विद्युत के घर के सदस्यों की नाक में दम आ जाता है। दिशाहीन जीवन बिना कुतुबनुमा के जहाज की तरह होता है। बिना सेनापति की सेना को देखिए। कोई किसी नियम का पालन नहीं करता। ऐसे ही अनुशासनहीन व्यक्ति के हाथ से 'संचित धन' फिसल जाता है।)

अनुशासन की नींव टिका है,
उत्तम शिक्षा का विशाल भवन ।
पृथ्वी की ज्यों टेक बना,
भगवान वासुकि का फल ।
अनुशासनहीनता का कैंसर,
बींध रहा शिक्षा का तन ।
भीतर-भीतर कुतर डालेगा,
ज्ञान विज्ञान का 'संचित धन' ॥ 58 ॥

卐

(उत्तम शिक्षा के ये विशाल भवन सभी अनुशासन की नींव पर टिके हुए हैं । कहते हैं कि भगवान वासुकि के फन पर यह धरती टिकी हुई है । अनुशासन व्यक्ति के लिए उतना ही आवश्यक है जितना भोजन । रोकिए ! अनुशासन हीनता के बढ़ते हुए कैंसर को । अनुशासन हीनता भीतर ही भीतर ज्ञान विज्ञान के संचित धन को समाप्त कर सकती है । इसलिए जागिए! अनुशासन के दृढ़ व्रती बन कर अपने और पराए सभी के जीवन को उन्नतिशील बनाइए ।)

यदि लाडलों ! तुम चाहते हो,
नया पुख्ता इतिहास गढ़न ।
अनुशासित करके निज जीवन,
पहले परख देश उलझन ।
सत्य से दृष्टि मिलाओ तो,
जगा निर्भयता अनुशासन ।

सुख क्षण देख सकेगा देश,
सत्य आचरण यदि 'संचित धन' ॥ 59 ॥

卐

यदि आप चाहते हैं कि देश के एक पुख्ता इतिहास का गठन हो। उन्नति और प्रगति की राह प्रशस्त हो। पहले जीवन को अनुशासित कीजिए। इस एक गुण के आने से आप उलझनों और समस्याओं को परखना सीख जाएँगे। जीवन में निर्भयता लाकर अनुशासित होकर सत्य से दृष्टि मिलाइए। आपके सत्य आचरण पर देश समाज की खुशहाली निर्भर करती है। आपका सत्य आचरण ही स्वयं को और समाज को प्रगति की राह दिखा सकता है।

काटो रस्सी फैशन की,
क्या देता फैशन-दुर्योधन।
अनावश्यकता के भाग्य पर,
क्यों अपव्यय श्रम-धन।
सब कुछ है शुद्धि मन की,
उच्च विचार सादा जीवन।
अनुशासन के अनुसरण से,
बढ़े मितव्ययता 'संचित धन' ॥ 60 ॥

卐

काट दीजिए इस फैशन की रस्सी को। यह फैशन आपके समय का दुरुपयोग है। पैसे का दुरुपयोग है। आवश्यकता पर धन खर्च कीजिए। अनावश्यकता पर

नहीं। परिश्रम के टपके पसीने से उत्पन्न धन को बेदर्दी से नहीं खर्च कीजिए। मन की शुद्धि सबसे आवश्यक वस्तु है। मन को शुद्ध बनाइए। सारा जीवन और उच्च विचारों ने इस संसार को बहुत कुछ दिया है। अतः इसी विचार पर चलकर उत्तम विचार शक्ति के चमत्कारों से संसार को चमत्कृत कीजिए। अनुशासन का अनुसरण कीजिए और मितव्ययी बनकर उद्यम कीजिए।

कर्म प्रेरणा से पिघल पिघल,
फूट पड़ेगा अनुशासन।
यथा झरनों के हृदय पसीज,
मधुर निकलता जल-जीवन।
कर्म-क्षेत्र में पुष्प खिलाता,
कर्म-धरा सुशोभित मन,
कहां ढूंढते अलख आनन्द?
कर्म क्षेत्र, पसीना 'संचित धन' ॥ 61 ॥

卐

(कर्म भावना और कर्म करनेकी प्रेरणा से पिंघल कर अनुशासन फूट पड़ता है। जैसे जब झरनों के हृदय पसीजते हैं। मधुर जल प्राप्त होता है। कर्म में लगा हुआ मन कर्म क्षेत्र में सफलतता के फूल खिलाता है। अलख आनन्द के लिए भटकना नादानी है। कर्म क्षेत्र और पसीना ही अलख आनन्द और संचित धन है।)

अध्यापक एकाग्रता से समझा रहे थे। छात्र और छात्राएँ ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। और सुनने में लगा हुआ था एक

खिलती हुई कली का पूर्ण मनोयोग। अध्यापक कह रहे थे, "जब तक संसार में आँसू हैं, पीड़ाएँ हैं, हमें उन्हें शांत करने के प्रयास में रत रहना है। सदाचार और अनुशासन को जीवन का ध्येय बनाना है, हर पल अनुशासित रहना है।" वह कली तभी से घर, बाहर सभी जगह वह अनुशासित और नियम से रहने लगी। यहाँ तक कि भोर उसके संग उदय होती थी। पक्षी उसके जागने से चहकते थे। विद्वता और अध्ययन में अग्रणी लक्ष्मी अध्ययन करके साक्षात लक्ष्मी सी निखर आई। शुभ मुहूर्त की दुन्दुभि बजी। सुयोग्य व्यापारी पुत्र से विवाह हुआ अपने नियम पर चलने वाले व्यक्ति में स्वमेय अलौकिक शक्तियाँ आ जाती हैं। वही शक्तियाँ लक्ष्मी का संचित धन बनीं। प्रातः भोर लक्ष्मी जागी। सभी सोए हुए थे। नित्य कर्म करके उसने ईश वन्दना की। सास ससुर के मन में और दहेज की इच्छा थी। सास के मुँह से 'दहे' ही निकला था। 'ज' नहीं बोल पाई थी। शरीर में दाह होने लगा। ससुर ने कहा कि दहेज और आना चाहिए था कि चबूतरे से गिर गये और खाट पकड़ ली। तब उन्हें बहू की अलौकिक शक्ति का, नियम पर चलने का ज्ञान हुआ। उन्होंने उसे साक्षात लक्ष्मी के रूप में स्वीकार किया। सभी रोग दूर हुए। परिवार खुशहाल रहने लगा। यह है अनुशासन पर चलने का जीता जागता प्रमाण।

अनुशासन है कुतुबनुमा, दिशाबोधक यंत्र।
अनुशासित के पास है, जग प्रबोधक यंत्र॥

"यदि चरित्र-निर्माण न हुआ, तो सारे रचनात्मक कार्य-क्रम व्यर्थ हैं।" – **महात्मा गाँधी**

चरित्र

(Character)

"फूल खिलने दो, मधु-मक्खियां अपने आप उसके पास आ जाएंगी। चरित्रवान बनो जगत अपने आप मुग्ध हो जाएगा।" – **रामकृष्ण परम हंस**

सदाचार और उच्च विचारों में महारत हासिल करने के लिए ही मानव जीवन है। संसार के किसी अन्य जीव को यह शिक्षा नहीं दी जाती। सदाचार और उच्च विचारों को जिसने महत्व दिया है, वास्तव में उसने ही जीवन जिया है। कोरे कागज पर जो लिख दिया गया, वह उस कागज का चरित्र है। कहावत है कि चरित्र ऐसा हीरा है जो हर पत्थर को काट सकता है। व्यक्ति के दुःख समूहों को समूल उखाड़ने की सामर्थ्य चरित्र बल में निहित है। चरित्रवान का हृदय गुणग्राही होता है। शुद्ध आचरण से मानव का सत्चरित्रता कोष बढ़ता है। पवित्र चरित्र ईश्वर की अनुकम्पा, प्रभु का प्रशाद होता है।

प्रभु प्रसाद है पवित्र चरित्र,
आशीर्वादित अंतःकरण।
शुभ चरित्र पर निर्भर करते,

देश, राष्ट्र के पुल, भवन ।
बलिदान और आत्म सम्मान,
सृष्टि चमत्कार विलक्षण ।
भर-भर आचरण-सुधा कोष,
चरित बल संबल 'संचित धन' ॥ 62 ॥

卐

शक्ति प्राप्त करना चाहते हो, उत्साही बनना चाहते हो, फूल की तरह खिलना चाहते हो, सुख निश्चित करना चाहते हो, केवल एक काम करो-चरित्रवान बनो । दुर्बल चरित्र को स्वयं से भी कोई आशा नहीं रखनी चाहिए क्योंकि प्रकृति की आँखों बहुत तीव्र दृषिट रखती हैं। दुर्वल चरित्र व्यक्ति दर्पण में स्वयं से निगाह मिलाने से भी कतराता है । अतः चरित्र की हर प्रकार से रक्षा कीजिए । आत्म सुखों को देखना चाहते हो, चरित्र बल का दर्पण निहार लीजिए । चरित्र बल को जितना चमकाएंगे, आत्मा को उतना ही प्रसन्न पायेंगे ।

विजय सत्चरित्रवान व्यक्ति का वरण करती है । उसके उद्देश्य पूर्णता को प्राप्त होते हैं । ऐसा व्यक्ति विजय से आंख मिलाता है । मनोवांछित फल स्वयं आकर उसके कार्य की सिद्धि करते हैं:-

हृदय की हार जुआरी सी,
हरा देती स्वपनिल यौवन ।
जीत से आंख मिलाओ तो,
वर लेंगे तुमको विजय नयन ।

गुलाब गुच्छे सी विहंस विहंस,
जीत करेगी अभिनन्दन ।
उद्देश्य ईश सा पूर्ण बनेगा,
ढेर लगेगा 'संचित धन' ॥ 63 ॥

卐

"माँ ! माँ ! मैंने अश्व देख लिया है । मैं भी एक अश्व लूंगा ।" पुत्र ने माता से आग्रहपूर्वक हठ किया । माता ने पुत्र वात्सल्यपूर्ण मुद्रा से देखा और कहा, "पुत्र तुम्हारे खेलने के लिए तुम्हारे पिता काठ का घोड़ा लाए हैं, उसी से खेलो । हमारे मन के अनेक कामना रूपी अश्व चहुंदिशि दौड़ते हैं, पहले उनको नियंत्रित करना सीखो ।"

मन के अश्वों को नियंत्रण करने वाले सारथि का चरित्र बल बढ़ता है । उसमें अलौकिक शक्तियों का समावेश होता है । आपकी विचार शक्ति आपके चरित्र का निर्धारण करती है । अतः विचार शक्ति को दृढ़ बनाइए । चरित्र की पूँजी बढ़ाइए ।

हर क्षण जिसका पानी भरते,
असंख्य रंगों वाले स्वप्न ।
कैसे छोटा बन सकता वह,
लोल कल्पना दुलारा मन ।
यह शुद्धता-पीयूष स्रोत है,
अवनति उन्नति का कारण ।
कर लो अश्व नियंत्रित इसके,
मिले ब्रह्मांड का 'संचित धन' ॥ 64 ॥

卐

मन में हजारों प्रकार के चित्र हर समय उभरते और मिटते रहते हैं। इन बनने बिगड़ने वाले चित्रों की मदद से मानव का चरित्र निर्माण होता है। मन ही शुद्धता का स्रोत है। यह ही मनुष्य की उन्नति और अवनति का कारण है। इसके अश्वों को नियंत्रित करके पूरे ब्रह्माण्ड के धन से धनी बन सकता है यह मनुष्य।

कन्फ्यूशियस ने बहुत सुन्दर वाक्य कहा है, "उत्तम व्यक्ति शब्दों में सुस्त और चरित्र में चुस्त होता है।" तात्पर्य है कि चरित्रवान अपने चरित्र की रक्षा में हर प्रकार की सावधानी बरतता है। वह मन, कर्म, वचन, बुद्धि से हर प्रकार से विचार करता हुआ सर्वप्रथम चरित्र की सुरक्षा पर ध्यान देता है क्योंकि उन्नति की चाह और प्रगति की राह बनाने का सर्वोत्तम यंत्र चरित्र बल है।

शुद्ध विचार और संकल्पों से,
शुद्ध गंगा सा अन्तःकरण।
पावनता के स्पर्श मात्र से,
प्राणी पाता मनन चिन्तन।
पवित्र भावना के भय से,
त्रस्त हुए हैं आक्रमण।
सफलता कूके जीवन आंगन,
शुद्ध भावना यदि 'संचित धन' ॥ 65 ॥

卐

जहां तक भूत प्रेतों का प्रश्न है, उनमें वश में न

आने वाला भयंकर भूत है अहंकार । जब यह आता है, इसके साथ डाकिनी, शाकनी, प्रेतनी और पिशाचिनी भी लगकर आ जाती हैं, इनके नाम हैं निन्दा, चुगली, ईर्ष्या, जलन । इनसे बचना दुःखों को अपने से दूर करना है ।

शुद्ध विचार और संकल्पों से जिसने अपने अंत:करण को गंगाजल के समान पवित्र बना लिया है । उसने मनुष्य होकर मनुष्यता के गुणों को प्राप्त किया है क्योंकि मनुष्य होकर भी मानवता के गुण प्रत्येक मनुष्य में नहीं मिलते । पवित्रता के स्पर्श मात्र से मनुष्य में मनन और चिन्तन शक्ति के गुणों का विकास होने लगता है । पवित्र भावना से अपवित्रता भयभीत होती है । शुद्ध भावना सफलता का स्वागत करती है । अत: मन को शुद्ध भावना से ओत प्रोत कीजिए । सब कुछ प्राप्ति के मार्ग सहज और सरल बनेंगे ।

बुरी बात है निन्दा, चुगली,
सचमुच अवगुण ईर्ष्या जलन ।
छोड़ बुराई गुण अपनाएं,
नूतन सीखें सदाचरण ।
दर्प दोष का दानव देखो,
दे रहा प्रशंसा प्रलोभन ।
ले जाएं न ठग छल कर,
सदाचार पोटली 'संचित धन' ॥ 66 ॥

卐

जब महापुरुषों की बात आती है, तो हमारे मस्तिष्क में यादों के झरोखे से अनेक नाम चमकने लगते हैं। लेकिन संसार में लौह पुरुषों के बारे में जब मेरा मस्तिष्क चिन्तन करता है, सबसे पहले स्मृति की कोठरी में दृढ़तापूर्वक अपने कार्य में संलग्न एक व्यक्ति मिलता है, वह है लौह पुरुष सरदार पटेल। दृढ़ता धन्य हुई थी अपने अनुरूप व्यक्तित्व को पाकर। विचारों की दृढ़ता, चिन्तन की गहनता और निर्लोभिता एक सच्चे देशभक्त में गुण रूपी हीरे मोतियों के अमूल्य कोष हैं। यही है सुख सम्पन्नता का खुला रहस्य। सरदार पटेल का समूचा व्यक्तित्व एक अत्यंत शक्तिमान चुम्बक की तरह है। उनकी ओजस्विनी वाणी के आगे मजाल क्या कोई टिक सके। जितना हम सरदार पटेल के जीवन को पढ़ते हैं, उतनी ही गूढ़ता बढ़ती है। उनके सुदृढ़, विशाल और भव्य व्यक्तित्व के कारण संसार ने उनके लौह पुरुष माना। वे संकल्प की दृढ़ता के प्रतीक हैं। उनका जीवन हमारे लिए एक सीख है।

लोहे की चौकीदारी में,
सोना करता है खन-खन।
लोहा काटता है लोहे को,
लोहा जाता सबसे ठन।
सीमा रक्षा में लुटा देता,
जीवन के बहुमूल्य कण।
धन्य जग में लौह पुरुष पटेल,
लोह विचार ही 'संचित धन' ॥ 67 ॥

卐

लोहा सोने की चौकीदारी करता है क्योंकि सोना लोहे की अल्मारी और लोहे के मजबूत तालों के भीतर रहता है। लोहे का यह प्रेम सोने के प्रति आसक्ति नहीं है। वह तो सार्वभौम रूप से सभी को प्रेम करता है। अपनी मजबूती के कारण वह विख्यात है। सुदृढ़ता के कारण अन्य बहुमूल्य पदार्थ भी उसी की ओर नहीं बल्कि सभी से उसका रिश्ता समान प्रेम-धर्म पर आधारित है। क्योंकि अन्य पदार्थ लोहे को नहीं काट पाते, केवल लोहा ही लोहे को काटता है। किसी से भी टक्कर लेनी हो, लोग लोहे को ही आगे करके खड़े होते हैं। लोहे की प्रवृति है, उसका सुदृढ़ होना यह गुण है कि वह सब से भिड़ जाता है। सीमा रक्षा के प्रश्न का उत्तर भी लोहा है। लौह पुरुष पटेल भी मुसीबतों से लोहा लेने में अद्वितीय थे। लौह विचार ही सर्वश्रेष्ठ होते हैं अतः विचारों को सुदृढ़ और पक्के बनाइए।

दुष्टता विषधरी मुख-चुम्बन,
करेगा स्वतः विनाश पतन।
गुणवत्ता गुण प्रकाश पुंज से,
सम्भव समाज मार्ग दर्शन।
बुन-बुन सद्गुण ताने बाने,
श्रेष्ठता वस्त्र बुन डालें।
सत्यता संचित कर वाणी,
कर लें सतसंगति 'संचित धन' ॥ 68 ॥

卐

दुराचरण को अपनाने से विनाश के अतिरिक्त जो हाथ लगता है वह पतन है। गुणों के प्रकाश से प्रकाशित होकर आप समाज का मार्ग दर्शन कर सकेंगे। सदगुणों के तानेबाने से ही श्रेष्ठता का वस्त्र बुना जा सकता है। वाणी में सत्यता का संचय करके सत्संगति को अपना संचित धन बनाइए।

कुसंग की बीमारी की भयानकता बहुत अधिक होती है। अनर्थ के अलावा इससे कुछ प्राप्त नहीं होता। प्रति क्षण इससे दूर रहने की प्रार्थना प्रभु से करनी चाहिए। सत्संग करने के प्रयास में रत रहना ही सर्वोत्तम और उन्नति प्रद है।

पवित्र चरित्र वृक्ष पनपने से,
व्यक्तित्व कोंपलें प्रसन्न।
दृढ़ विचार की शाखा शाखा,
आनन्दित कल्पना खग गण।
आत्म तने के बक्कल बक्कल,
उद्‌गार गोंद से उत्पन्न।
स्नेह छायामृत पथिक पी पी,
आशीर्वाद लुटाते 'संचित धन' ॥ 69 ॥

卐

सत्चरित्रता का वृक्ष अत्यंत पवित्र है। सुदृढ़ और सुन्दर व्यक्तित्व की कोंपले इसी वृक्ष में फूटती हैं। दृढ़ विचार की शाखाओं पर सुन्दर कल्पनाओं के पक्षी वास करते हैं। आत्मा रूप तने से उद्‌गार गोंद की

तरह उत्पन्न होते रहते हैं। ऐसे व्यक्तित्व के स्नेह की छाया में पथिक अपनी थकान दूर करके आशीर्वाद का संचित धन लुटाते हैं।

पवित्र चरित्र विषयक ज्ञान होने पर, गुणों की महिमा का पता चलने पर उनको सुनकर, उनका गहन अध्ययन करके मनुष्य बगुले की तरह उन पर ध्यान करे, बगुले का ध्यान बहुत गहरा माना जाता है। अपने अंगों, हाव भावों के उन गुणों के अनुरूप रखें। श्रवण किए ज्ञान को पुनः पुनः सुने। सोते जागते इन गुणों का मनन, अभ्यास करें, तब हृदय में इन गुणों के अंकुर फूटते हैं। अभ्यास बढ़ने के साथ साथ अलौकिक शक्तियों का प्रादुर्भाव होने लगता है। मन चाहे कार्य पूर्ण होने लगते हैं।

"विजय केवल परिश्रमी को ही प्राप्त होती है।"

–नैपोलियन

परिश्रम

(Labour)

"लगातार परिश्रम के बिना कोई फल प्राप्त नहीं होता।"

–गारफील्ड

भगीरथ-श्रम धन्य है, जिसके पसीने की बूंदें गंगा को धरती पर उतारने में सफल हुईं। परिश्रम के मल्ल योद्धा को अपने समक्ष खड़ा देख भला दैन्यता का दैत्य कब टिक पाया है। अपार संकल्प शक्ति के पुंज प्रज्ज्वलित नन्हें दीये ने भयंकर झंझावतों को सदा पछाड़ा है। यह आप ही हैं जिसकी अभय निर्भयता के आगे भयंकर आंधी, तूफानों के भयानक राक्षसराज घुटने टेकते देखे गये। याद कीजिए उस अदम्य साहस की, जिसने संघर्ष रूपी सिंह की दाढ़ों को उखाड़ने के लिए उसके मुख में हाथ डाला और वह बकरी सी हरकत करने लगा। फिर आज क्यों श्रम की अलौकिक शक्ति को भुला रहे हो? तुम वही हो, जिसे थकान कभी सता नहीं पाई है। थकान व्यक्ति को श्रीविहीन कर देती है। क्या अपनी अपार शक्ति अथकता को भूल गये। यह शक्ति सभी शक्तियों की संचालक है। इसके बिना व्यक्ति की मानसिकता युगों से निर्बल होती है। इस दुर्बलता ने कितनों के ताज, कितनों के राज्य छीनकर

उनके आंकड़ों के निशान भी नहीं छोड़े। इसलिए अथकता और परिश्रम की साधना-कसौटी पर अपने खरे पन का शुद्ध प्रभाव छोड़िए। कर्म पर अपने परिश्रम को मोहर लगाइए, बिना इसके कुछ भी तो नहीं। परिश्रम-प्रशंसा में विद्वानों ने एक-एक शब्द में जादू का सार भर दिया है। देखिए:-

"It is to labour and to labour only, that man owes every thing of exchangeable value. Labour is the talisman that has raised him from the condition of the savage; that has changed the desert and the forest into cultivated fields; that has covered the earth with cities, and the ocean with ships, that has given us plenty, comfort, and elegance, instead of want, misery and barbarism."

— J. Macculloch

कितने ही श्रीविहीन हुए,
छिने कितनों के सिंहासन।
कितनों की नींद हराम हुई,
डोले कितने दृढ़ासन।
एक घड़ी का भी विश्राम कभी,
युगों का करता निष्कासन।
विश्राम न लो चलते जाओ,
लिए अथकता 'संचित धन' ॥ 70 ॥

卐

परिश्रम मूलमंत्र है। इसकी सिद्धि सफलता है। सारी प्रकृति हर क्षण कार्यरत है। संसार की सारी सुख समृद्धि

की टेक है - परिश्रम । परिश्रमशील व्यक्ति के लिए कुछ भी असाध्य नहीं। गांधी जी ने अपने लेख में कहा है कि परिश्रम के बिना जो अन्न खाता है, वह चोरी का अन्न कहलाता है । इसलिए तो कविता में यह बात इस प्रकार कही गई है :-

आराम हराम है, कुछ काम किया कर ।
जीना है मज़ा, हरपल मेहनत से जिया कर ।

वह सत्तर वर्षीय माली अपनी छोटी सी बगीची में जब तक अपना पसीना नहीं बहा लेता, उसे सन्तुष्टि कहाँ । एक दिन में ही बेचैन हो उठता है । उसका कहना है कि ये पौधे मेरी सन्तान की तरह हैं । जब तक मैं इन्हें अपना पसीना पिला कर नहीं पालता-पोसता, तब तक न इन्हें तसल्ली न मुझे चैन । लोग उसकी बगीची देख कर खिल उठते हैं । उस समय वह खुरपा एक ओर रखकर दोनों हाथ जोड़े रखता है, ताकि हथेली के परिश्रम फ़फ़ोले किसी को न दीखें । ये परिश्रम-फ़फ़ोले ही तो रहस्य हैं फूलों के निखार के । माली का कहना है, "साहेब ! परिश्रम निखार लाता है जीवन में, मन में, उपवन में । मेरी बगीची के फूल विभिन्न प्रतियोगिताओं में अवश्य ही पुरस्कार लाते हैं ।" मैं अवाक् सोच रहा था, भोले माली के सारगर्भित परिश्रम-मंत्र के बारे में । परिश्रम-पसन्दगी प्रत्येक तरक्की-पसन्द व्यक्ति के लिए आवश्यक है । अतः परिश्रम को पूँजी बनाइये । परिश्रम ही वह तप है जिससे असम्भव को भी सम्भव बनाया जा सकता है ।

पारस पत्थर बोल उठे,
लोहा बन जाए कंचन ।
या वसिष्ठ के तप का जादू,
हमारा बन जाए फौरन ।
झूठ तन्त्र की टोह घुमाता,
हमें लोभ का खरदूषण ।
अन्धे के हाथ बटेर लगे,
माल मुफ्त का 'संचित धन' ॥ 71 ॥

卐

प्रकृति के सब कोषों पर मनुष्य का अधिकार है, वह अपने को टटोले तो परिश्रम वह जड़ी बूटी है, जिससे हर प्रकार का जादू किया जा सकता है । जीवन के गुलाब से श्रम की महक आती है ।

परिश्रम से जी चुराने वाले कल्पनाओं के प्रदेश में लालसाओं से बुनी चादर ओढ़े भ्रमण करते हैं । वे पारस पत्थर को अपनी कल्पना का देवता बनाकर कामना के पुष्प उस पर चढ़ाकर लोहे को सोना बनाने का मंत्र माँगते हैं । वे चाहते हैं कि वसिष्ठ का तप-श्रम थोड़ी देर के लिए जादू कर दे कि संसार की सारी निधियों का स्वामित्व प्राप्त हो जाए । यह लोभ और लालच का खरदूषण व्यक्ति को इसी प्रकार भटकाता है । मुफ्त का माल तो अन्धे का हाथ बटेर लगने के समान है । छोड़िए इसे । आपके पास एक पारस पत्थर है, एक शुद्ध, असली पारस, वह है आपका परिश्रम-बल । इसके छूने से हर वस्तु सोना बनती है ।

झांकते तब भण्डारों से,
पन्ने, हीरे, स्वर्ण रत्न ।
क्यों सोया आलस्य ओढ़,
छोड़ यह मुर्दे का कफन ।
प्रभु के आशीषों की थाती,
मांगे तुझसे तेरा यत्न ।
तेरे लिए ही तो प्रकृति ने,
किया है सारा 'संचित धन' ॥ 72 ॥

卐

परिश्रम की मशाल दूसरों का पथ प्रदर्शन करती है । पुरुषार्थ से युक्त होकर पुरुष सबकी प्रसन्नता का कारण बनता है । यह परिश्रम ही है जो प्रसिद्धि की बुलन्दियों पर चरण रखता है । शिखर धन्य होते हैं, उसके चरण स्पर्श करके ।

"अनवरत परिश्रम ही जीवन का सार है ।"

अथकता

(Untiresomeness)

"गतिशील मनुष्य ही मधु प्राप्त करता है । परिश्रमी मनुष्य ही स्वादिष्ट फल चखता है । सूर्य का परिश्रम देखो जो नित्य गतिमान रहता हुआ कभी आलस्य नहीं करता ।"

– ऐतरेय उपनिषद

श्रम दीपक की दीवाली से,
जगमग जगमग जगमग मन ।
प्रसन्नता सुन्दरी के उरमें,
जिसके दम से आजीवन ।
संसार मणि बन चमकोगे,
जिसकी प्रफुल्लता के कारण ।
परिश्रम दे देता है कर में,
विश्वासों का 'संचित धन' ॥ 73 ॥

卐

श्रम के दीपक से मन प्रसन्न बना रहता है । प्रसन्नता सुन्दरी श्रम-देवता से प्रसन्नता होती है । इसी की प्रफुल्लता से मनुष्य संसार-मणि होकर चमकता है । परिश्रम मनुष्य के हाथों में विश्वासों का संचित धन सौंपता है ।

सोये हुए को आप जगा सकते हैं लेकिन जागे हुए को जगाना कठिन होता है । जाग्रति को उसका पुरुस्कार

दीजिए । आलस्य से दूर हटिए, परिश्रम पर डटिए ।

उछलती बलखाती लहरों के,
पग के घुँघरु की छन-छन ।
तुम हो जाना मदमस्त नहीं,
सुन-सुन भ्रमर गीत-गुंजन ।
पसीने की लघु सरिता को,
करना है नूतन सृजन ।
मत निहार आलस्य बिछौना,
अथक अथकता 'संचित घन' ॥ 74 ॥

卐

आपके पसीने की लघु सरिता व्याकुल है इस संसार को कुछ नया सृजन देने के लिए । इसकी व्यथा दूर कीजिए । हवाई किले बनाने वालों की गिनती को कम कीजिए । जिन्होंने परिश्रम से हाथ पैर मारे हैं, मेहनत पर जिनका सच्चा हाथ बैठा है, उन्हीं के हाथों की कठपुतली है यह संसार । उगते हुए सूर्य को सभी ने नमन किया है । परिश्रम रूपी सूर्य के सूरजमुखी को आपने सदा-सर्वदा खिलते पाया है ।

ठाली रह आलस्य कमाना,
स्वयं लादना निठल्लापन ।
सत्यानाश का उत्तम पथ है,
हींग न फिटकी उत्तम वरण ।
उपयोगिता के उर में बैठ,
बन सबके उपयोगी जन ।

एक–एक क्षण श्रम–सीकर पूंजी,
बन सकती है 'संचित धन' ॥ 75 ॥

卐

बिशप कम्बरलैंड ने कहा है, "जंग लगकर नष्ट होने की अपेक्षा घिस–घिस कर खत्म होना कहीं अच्छा है ।" जब कर्मक्षेत्र में उतर गये, तो डट जाना ही बेहतर है, कल किसने देखा है । जो कुछ है वह आज का और अभी का अस्तित्व है । निराशा और घबराहट अनगिनत रोग, शोक, विपत्ति के अलावा क्या दे सकते हैं । निराशा मनुष्य को शान्ति तो दे सकती है, लेकिन वह शान्ति चिरस्थाई है यानि मृत्यु रूपी शान्ति । क्योंकि आलस्य, अकर्मण्यता, हीन भावना और अनेक नाना प्रकार के दुर्गुणों का वास निराशा की गुफा में रहता है। परिश्रम शब्द आपके नाम के साथ 'फिट' बैठता है। अतः परिश्रम पूंजी को अपना 'संचित धन' बनाइए ।

हीन भावना की ड्योढ़ी पर,
जुटे अकर्मण्यता साधन ।
बुझा बुझा सा दीपक मन का,
तन लिपटी आलस्य थकन ।
रोम रोम जम्भाई फूटे,
कुन्द हुई धड़कन धड़कन ।
सुस्ती, आलस्य अभावों के,
कहां ले जाओगे 'संचित धन' ॥ 76 ॥

卐

परिश्रम के नाम पर जिसका दिल बुझ जाता है, इस नाम से जिसे बुखार चढ़ जाता है, वह है अकर्मण्यता। अकर्मण्यता जिसकी प्रेमिका बन जाती है, उसे हीन भावों से ग्रस्त कर देती है। जीवन को सुस्ती आलस्य और अभावों का दरिद्र-गृह बना देती है। रोम-रोम के अणु अणु को अपने परिश्रम से भर दीजिए। सब कुछ प्राप्त होगा-परिश्रम कीजिए।

निराशा की चादर काली,
भरा घबराहटों से मन।
प्रश्न प्रश्न अम्बारों अम्बार,
प्रश्न उलझे अनेक प्रश्न।
"कहां जाऊं क्या करूं, कैसे ?
कहां सो गया हे भगवन्।"
छोड़ो, तनिक जागकर देखो,
पाओ श्रम से 'संचित धन' ॥ 77 ॥

卐

निराशाओं ने जो सौगात दी हैं, वे तुम्हारे समीप खड़ी हैं-घबराहट, बेचैनी, उलझे हुए प्रश्न। एक फटकार लगाइए। हुंकार कीजिए। निराशा की सौगात हवा में उड़ती नज़र आएंगी। परिश्रम का कुबेर तुम्हें सब ओर से सुखों का संचित धन प्रदान करेगा।

उन्माद निराश हो जाने का,
बढ़ाता इतना पागलपन।
आशा महलों का चूर्ण बना,

चूर-चूर संकल्प दर्पण ।
क्यों कतराते हो स्वयं से,
क्यों संकट को हुए अर्पण ।
निराशा के झोले झांकें,
कुशंका, संकट 'संचित धन'॥ 78 ॥

卐

त्याग दीजिए इस निराशा को। इस कुलटा ने सब के स्वप्न दर्पण तोड़े हैं। संकल्पों को उखाड़ा है। दुःखों के दिशाहीन जंगल में यह निराशा ही लेकर आई है। इससे उबरिए, दूसरों को उबारिए। पसीने के मुस्कुराते मोतियों की शुल्क देकर संसार की निधियों का प्रभुत्व प्राप्त कीजिए।

"उन लोगों को सफलता प्राप्त नहीं होती, जो आलसी हैं, दुष्ट हैं, छलिया हैं। लोगों की कहन सुनन से डरते हैं और काम को टालते हैं।"

–शेखसादी

दिवास्वप्न

(Day-dreaming)

"वह आदमी बनो जो काम करते हुए गाता है।"

–जापानी लोकोक्ति

निराशा और कुविचार परिश्रम की तपस्या को भंग करने वाले चण्ड मुण्ड राक्षस हैं। इन्हीं भयंकर राक्षसों को परिश्रम की देवी मां जगदम्बा संहार करती हैं। कुशंका, आलस्य, अनिच्छा को पास नहीं फटकने देना चाहिए। क्योंकि:–

हल चलता जब मन धरती पर,
करने को शुभ बीज–वपन।
कुविचार फटकने नहीं देना,
सूंघ लेते हैं धरा गगन।
कुशंका पनपी, सत्कर्म मिटा,
बढ़ा दूध में खट्टापन।
निराशा, अनिच्छा के कार्यों से,
फल अनचाहा, 'संचित धन' ॥ 79 ॥

卐

"दूसरों के नयनों को आनन्द देने में चन्द्रमा को फीका करते हो। दिव्य पुरुष हो। तुम्हारी दहाड़ से पर्वतों का दिल काँपता है। किन्तु अकर्मण्यता का अन्धकार रूपी बादल तुम पर हावी हो रहा है। यह बात अशोभन है पुत्र! अकर्मण्यता त्यागो। जागो।" पिता के शब्दों का चमत्कार हुआ। किशोर बाल-रवि सा उदित हुआ। दिवास्वप्न से मुक्ति मिली। जीवट का जीवन जीने की युक्ति मिली। आपकी भी यदि यही चाह है, आपके लिए भी यही राह है।

विक्षिप्त बिगड़े दिमागों का,
हो जाता उत्साह, हनन।
घोर शत्रुता आश निराश में,
पुरु आम्बी जैसे दुश्मन।
मूढ असंतुलित दुःखी निराशा,
ईर्ष्या संग लिए जलन।
गहरे दुःख गहरा जाती,
निराशा बनकर 'संचित धन' ॥ 80 ॥

卐

जब व्यक्ति निरुत्साही हो जाता है, उसका मस्तिष्क और निराशाओं की बीच झूलने लगता है। आशा और निराशा में घोर शत्रुता है। आशा के आते ही निराशा गायब हो जाती है। मूढ़ निराशा के साथ ईर्ष्या, जलन, द्वेष आदि भी मानव मस्तिष्क पर हावी हो जाते हैं। निराशा जब व्यक्ति का संचित धन बनती है, दुःखों

को और अधिक गहराकर देती है।

वास्तविकता यह है कि दुःख आपके लिए नहीं बने। दुःखों ने आपको नहीं पकड़ा, आपने दुःखों को पकड़ रखा है। पीड़ा ने आपको नहीं जकड़ा, आपने पीड़ा को जकड़ रखा है। पकड़ ढीली कीजिए। अन्तःकरण को प्रफुल्लित कीजिए। मस्तिष्क को शुभ विचारों से परिपूरित कीजिए। सुखों के अम्बार लगेंगे। चमत्कारों को भी आप चमत्कार लगेंगे।

जीवन के वास्तविक संघर्षों से आंख चुराने वाले भी कुछ न कुछ सृजन करते हैं। वे दिवास्वप्नों का एक काल्पनिक संसार गढ़ने का साहस रखते हैं। वे उठते, बैठते, सोते जागते अपने दिवास्वप्न में अथवा "शेख चिल्ली की दिल्ली" में भ्रमण करते रहते हैं। ऐसा लोग अपने सपनों के सम्राट होते हैं। वे काल्पनिक रत्न खचित बहुमूल्य सिंहासन पर सोते हैं। जागते ही धरा पर होते हैं और बहुत रोते हैं। क्योंकि दिवास्वप्न में उन्हें जो आनन्द का रसास्वाद होता है, जागरण उसमें किरकिरी डाल देता है। वे अपने दुःखों से अधिक जागरण को कोसते हैं। वे सोचते हैं यदि उनके वश में हुआ, वे अवश्य जागरण को बंद कराकर रहेंगे। जैसे प्रगति का नव जागरण, प्रभात जागरण। ये जागरण दिवास्वप्नों की प्रगति में बाधक हैं।

इस प्रकार यदि व्यक्ति को दिवास्वप्न में ही खोए रहना है तो, उसके लिए क्या आश और क्या निराश। संस्कृत में कहानी है-एक। याद आया, वह निर्धन व्यक्ति

जो मांग कर सत्तू लाता था। घड़ों में एकत्र करता था। मांगने की "स्पीड" तेज थी। वह अपने भविष्य को उन्नतिशील बनाने, दिवास्वप्न में पहुंच गया। उसका कुंवारापन जागा क्योंकि शादी विहीन प्राणी था। विचार-लक्ष्मी प्रकट हुई। विचारों से सिक्के खन खन करके गिरने लगे। वह सोचने लगा। "सातों घड़ों का सत्तू बेचने से जो धन आएगा, उनसे बकरी खरीदनी है। मेरा भविष्य उसके परिवार बढ़ने पर निर्भर करता है। बकरी का भरा पूरा परिवार होने पर उसे बेचकर प्राप्त हुए धन से गाय खरीदूंगा। उसके बढ़े परिवार को बेचकर भैंस खरीदूंगा और सम्पन्न होने पर चार शादियां करके चार कन्याओं का भला करूंगा। इससे देश सेवकों में एक और वृद्धि होगी। लेकिन जब वे आपस में वाक्-युद्ध अथवा मल्ल-युद्ध करेंगी, मुझे पटेबाजी आती है, इस मौके को मैं हाथ से नहीं जाने दूंगा, लट्ठ लेकर पैंतरे बतलता हुआ चारों के झगड़े को विफल कर दूंगा।" यह सोचता हुआ वह सचमुच लट्ठ लेकर अपना कर्तव्य निभाने लगा। जागरण होने तक उसके करामाती लट्ठ से सातों घड़े वीरगति को प्राप्त हो गये। जागरण ने एक बार फिर उसके दिवास्वप्न को आहत कर दिया था। कविता में इस विचार को ऐसे भी व्यक्ति कर सकते हैं-

सपनों के कर-कमलों में,
देकर तुमने मृदुल सुमन।
निहार रहे बनती माला,

संजो संजो दुहरे स्वप्न ।
शेखचिल्ली की स्वप्न बाढ़,
स्वप्न थिरकते चिर स्वप्न ।
स्वप्न देखते सपनों के,
सपन में मिलता 'संचित धन' ॥ 81 ॥

卐

सपनों के कमल रूपी हाथों में तुमने सुकोमल फूलों को दे दिया है। अभी भी दुहरे सपनों में बनती हुई माला को देख रहे हो। यह सपनों की बाढ़ ऐसी ही है, जैसे शेखचिल्ली के स्वप्न। ऐसे सपनों से तो आप स्वप्न और कल्पना में ही सब कुछ पा सकते हैं, वास्तविकता में नहीं। दिवास्वप्न देखने वालों का "संचित धन" उनके सपने होते हैं यथार्थ से इसका कोई वास्ता नहीं होता।

"व्यस्त लोगों के पास आँसू बहाने के लिए समय नहीं होता ।"
—शेखसादी

समय

(Time)

अगर तुमको एक क्षण का भी अवकाश मिले तो तुम उसे शुभ-कार्य में लगाओ, क्योंकि कालचक्र क्रूर और उपद्रवी है ।
—फ्रैंकलिन

"सब कुछ लुटाकर भी क्या बीता हुआ एक क्षण वापिस लाकर दोगे? बहते हुए गंगा जी के जल में एक बार डुबकी लगाकर क्या दुबारा डुबकी उसी जल में लगा दोगे। क्या कहे हुए वाक्य को लौटा लोगे?" उत्तर आने से पहले अभी संध्या का पक्षी बोल गया "चीं चीं चीं" यह असम्भव से परे का असम्भव है। आज हम यदि सम्भव के महत्व को नहीं समझ पाए, कल असम्भव का महत्व समझने का कोई लाभ नहीं, क्योंकि आज और कल के बीच अन्तर आ गया – धरती और आकाश का। आज जिस पौधे पर कली खिली है, कल फूल बन जाएगी। अर्थ तो सम्भव का समझना है। एक एक क्षण जो आपके हाथ में है, उसका दिल खोल भरपूर सही उपयोग आज से अभी से प्रारम्भ करना सम्भव और सरल है। यह धरा आज पर टिकी है। अभिनन्दन कीजिए आज का, आज के आदि, मध्य और अन्त का क्योंकि इस अभिनन्दन के पश्चात फिर

एक और आज आपके अभिनन्दन के पाने और आपके सत्कार्य का हिस्सा आपको देने को व्याकुल है।

कल कल करता बहता झरना,
कल के कहता राज गहन।
कल से पहले "अ" रखकर,
आज अकल के ताज पहन।
आज पुरातन आज सनातन,
अगले पिछले कल का परिवर्तन।
कंचन रत्न बटोरे जितने,
आज आज का 'संचित धन' ॥ 82 ॥

卐

आज के राज के कारण आज समझ पाया हूँ कि कवि ने किसान को ग्राम देवता कहकर क्यों सम्बोधित किया है। किसान केवल कर्मठ ही नहीं, ज्ञान का आधार भी होता है। केवल आज के महत्त्व पर ही अनेक कहावतें ग्रामीण अंचलों में मिलती हैं। कहा गया है कि "साँप निकल गया, अब लट्ठ पीटते रहो," यानि समय निकल जाने के बाद पछतावा ही हाथ लगता है। इसी बात को "का वर्षा जब कृषि सुखाने" के रूप में कहा गया। इसी बात को "अब पछताए क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत" जैसे प्रभाव पूर्ण ढंग में बाँधा गया। संसार में आज और अब का महत्त्व है। सुकर्म को आज और अभी उत्साहित होकर प्रारम्भ कीजिए। यही शुभ मुहूर्त है।

आज हमारा, आज तुम्हारा,
आज सभी का अभिनन्दन ।
आज संसार का कौतुक है,
आज रहें जी भर के मगन ।
कल के सभी कार्य भुलाकर,
आज हाथ से बुने वसन ।
कल भला किसने देखा है ?
आज आज का "संचित धन" ॥ 83 ॥

卐

यह संसार 'आज' का कौतुक भर है। समय-निष्ठा को पहचानिए । आपका आज का परिश्रम सारे दुःखों का सफाया करने की सामर्थ्य रखता है । आज के परिश्रम पर जीवन का सुख टिका है । आज कर्मठ होकर कार्य कीजिए, खुशहाली को निमन्त्रण दीजिए ।

एक बुजुर्ग, जिन्होंने पूरा जीवन हंसी ठट्ठे में, निठल्लेपन में गुजार दिया था उन्होंने भी अपने जीवन से जो सीखा वह साधारण नहीं है । अनन्त की ओर यात्रा करने से पहले उन्होंने संसार के लिए यह संदेश दिया है ।

"समय शिव है, कह दिया था शव, गुदगुदाने के लिए,
अब कूंच करता हूं, फिर कभी न आने के लिए ।
जो कुछ पाया है जीवन खोकर, सुन लो--
समय की चूक है बार बार पछताने के लिए ।"

समय का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति को सफलता-

लक्ष्मी वरण करती है। कल पर काम छोड़ने वाले व्यक्ति के कार्यों में से झरने की तरह कल-कल की ध्वनि होती रहती है। आज पर भरोसा रखने वाले, प्रत्येक क्षण की उपयोगिता बढ़ाने वाले निश्चय ही अपनी विजय श्री को अपने समक्ष खड़ा पाते हैं। आज ही वह भाग्यशाली दिवस है, जो आपकी प्रगति के मोतियों को चुनकर लाया है। आज का वन्दन कीजिए, गर्व से आज का सुस्वागत कीजिए। आज के क्षण-क्षण को अपने सत्कार्य से धन्य कीजिए।

भूत भविष्य भूमध्य रेखा पर,
मिला आज को सिंहासन।
कौन भूत को पा सकता है,
किसने भविष्य के किए दर्शन।
आज विचार आज आज है,
करो आज को आज नमन।
आज आज को बना आज,
आज आज का 'संचित धन' ॥ 84 ॥

卐

'आज' के उत्तरदायित्व के बोझ से झुकना उसकी नम्रता बन गई। नम्रता युक्त व्यक्तित्व जब परिश्रम परायण हुआ, अन्य सभी गुण आकर्षित होकर उसमें समाने लगे। वह व्यक्ति कोई ओर नहीं आप हैं। 'आज' के महत्त्व को मानिए, अपने अस्तित्व की विशेषता जानिए–सुकर्म हेतु परिश्रम करने की ठानिए–आज, अभी, अब।

"उत्साह पत्थरों के दिल दहलाता है, उत्साह हवाओं के रुख मोड़ सकता है।" **–आर. आर. शर्मा**

उत्साह

(Enthusiasm)

"उत्साह का योगी सत्कार्य करने की उमंग लिए अरुणोदय सा उल्लासित रहता है।" **–जी. के. शर्मा**

उत्साह की पूंजी खर्च करने से बढ़ेगी। उत्साहित हो जाइए। क्यों हाथ पर हाथ धरे बैठे हो? आनन्द के अक्षय भण्डार होते हुए भी दुःखों को तुमने ईश्वर की इच्छा मान लिया है। ईश्वर ने अपने पुत्रों को सुख-सम्पन्न बनाकर भेजा है। भगवान ने सबको सोना बनाने वाले पारस पत्थर रूपी अलौकिक शक्ति सम्पन्न करके भेजा है। उत्साहहीनता को ओढ़-बिछाकर यदि कोई आजीवन कंगाल बना रहे तो दोषी कौन है? एक कंगाल साधु आजीवन पारस पत्थर को अपने सिरहाने रखकर सोता रहा और उसकी शक्ति न पहचानने के कारण आयु भर अपनी कंगाली का रोना रोता रहा। एक उत्तम प्रमाण पत्र प्राप्त मैकेनिक अपनी उत्साहहीनता को सीने से चिपकाए दुःखों का बोझ ढोता रहा। जो काम उसकी दुकान पर आते हैं, अधिकतर को लौटा देता है। अन्ततः उसे टी.बी. ने घेर लिया। उत्साह हीनता के कारण आज वह दुःखों के बोझ तले दबकर

मर गया । एक अन्य व्यक्ति जो भीषण ज्वर से लगातार चार महीनों से पीड़ित हो रहे थे। डाक्टरों के जबाब मिल चुके थे। घर-परिवार भी निराशा के आंसू बहा रहे थे। अस्पताल में बुखार में पड़े वे स्वयं ज्वर वेंदना में जीवन की अंतिम घड़ी गिन रहे थे । चमत्कार हुआ एक साधु वहां आए । पांच मिनट सामने खाली बैड पर बैठ गये । उन्होंने मौन तोड़ा । बोले, "तुमको क्या हुआ है ।" मरीज ने अपनी सब बातें बता दीं । साधु ने कहा, "तुमको कुछ नहीं हुआ है । उत्साहित होइए, उल्लास का संचार कीजिए । विचारिए कि मैं स्वस्थ हूँ ।" कहकर साधु बाबा अंतर्ध्यान हो गये । मरीज को दवाई लग गई । वह स्वस्थ हो गया । आज अच्छे लेखकों में उसकी गिनती है । उत्साह अमृत है, सदा इसका पान कीजिए, मन मस्तिष्क और आत्मा को उत्साह, उमंग और उल्लास से भरपूर कीजिए । क्योंकि :

दृढ़ भाव उत्साह, उमंग से,
खिले बुढ़ापे में यौवन ।
बुझी बात के हृदय में भी,
सजग हो उठती धड़कन ।
विश्वास अंकुरित हो जाते,
जीवन पाता स्वावलम्बन ।
उत्साह सूर्य की किरण-किरण,
जगमग जीवन 'संचित धन' ॥ 85 ॥

卐

मनुष्य का दृढ़भाव, उत्साह और उसका हर क्षण प्रसन्न बने रहना बड़े बूढ़ों में भी जवानी का संचरण करता है। उसकी जिन बातों में बुझा बुझापन आ जाता है, उनमें उत्साह की धड़कन झलकने लगती है। उत्साह का अंकुरण होता है। जीवन स्वावलम्बी बन जाता है। उत्साह रूपी सूर्य किरण जीवन के "संचित धन" को जगमगा देती है।

भावना थकी, थके पौरुष,
साहस बल का चुका ईंधन।
मस्तिष्क बावरा सोच रहा,
वृथा चुकी जीवन की लग्न।
सोचो, ऐसी सोच बुरी है,
संग सजाति तड़प, वेदन।
जीवन हाट का सुख केवल,
उत्साह उमंग का 'संचित धन' ॥ 86 ॥

卐

भावना के थकने से व्यक्ति का पुरुषार्थ थक जाता है। साहस बल का ईंधन समाप्त हो जाता है। मस्तिष्क जीवन की लग्न को बेकार मानने लगता है। ऐसा सोचना बुरा है, क्योंकि ऐसे विचार के साथ उसके सजातीय तड़प और वेदना आकर जीवन को और दुःखी बनाने लगते हैं। जीवन रूपी हाट का सुख केवल उत्साह उमंग के "संचित धन" को एकत्र करने में है।

उत्साह हीनता जीवन के प्रिय और मूल्यवान क्षणों

को अप्रिय बनाती है। निरुत्साह जीवन के सुखों को पास नहीं फटकने देता। इसके आते ही सुख नौ दो ग्यारह हो जाते हैं। हर कार्य पहाड़ सा मुश्किल लगने लगता है। इसलिए धड़धड़ाते हुए उठिए। उत्साहित होइए। निरुत्साह को मन-प्रदेश से देश निकाला दीजिए। उमंगों का चुम्बन कीजिए। उल्लास का आलिंगन कीजिए। आपके उत्साहित होते ही निरुत्साह की दुर्गन्ध भाग जाएगी। उत्साह की महिमा कितनी प्यारी है। वास्तव में यह तीन लोक से न्यारी है। यह आपके घर की पूंजी है। इससे लाभान्वित होइए। इसका सदुपयोग कीजिए। इस रहस्यमयी शक्ति से कितनों ने अपने और दूसरों के घर बनाए हैं, यह परोपकार भी है। उत्साह वह मेंहदी है जो बांटने वाले के हाथों में स्वयं रचती है। अतः उत्साहित होइए, उत्साह बांटिए। कविता की इन पंक्तियों को बार-बार पढ़िए और जीवन में ढालिए।

उत्साह शरीर का विद्युत है,
यह कंचन सा सत्य वचन।
इस पर निर्भर जीवन मेले,
इसी पर आश्रित जीवन मरण।
इसी से महक महक जाता,
फूलों के यौवन का वन।
जड़ चेतन में प्राण फूंकता,
उत्साह उमंग का 'संचित धन' ॥ 87 ॥

卐

सोने जैसी खरी और सच्ची बात यही है कि उत्साह शरीर की बिजली है ! जीवन के मेले उत्साह पर निर्भर करते हैं । जीवन मरण भी इसी के आश्रित हैं । फूलों की जवानी का जंगल उत्साह की शक्ति से महकता है । जड़ चेतन को प्राण दान देने वाला उत्साह और उमंग रूपी "संचित धन" ही है ।

मनोबल कलम तोड़ देता,
हो फटाफट विकेट पतन ।
काया क्रीज की पलट देता,
बॉलर का साहस नूतन ।
हारी पारी के शव में भी,
कर देता प्राण संचरण ।
उत्साह कोष मनोबल का,
भाग्य चमकाता 'संचित धन' ॥ 88 ॥

卐

मनोबल के धनी व्यक्ति में बला का उत्साह होता है । जब बॉलर, साहस और उत्साह दिखलाता है, विकेट गिरने लगते हैं । हारी हुई टीम उत्साह संचरण से अपनी जीत दर्ज करती है ।

स्वेट मॉर्डन ने अपनी पुस्तक में एक उदाहरण दिया है । एक व्यक्ति अपने दुःखों की गाथा लेकर सुकरात के पास आया और बोला, "इन सभी दुःखों के कारण मैं मरना चाहता हूँ ।" सुकरात ने तपाक से कहा, "फिर देर किस बात की, जब तुममें उत्साह ही नहीं, डूब

मरो, तुम्हारा मरना ही अच्छा है। दुनिया के सुखों में उत्साह है, उमंग है, जब तुममें उमंग, उल्लास ही नहीं क्या करोगे सब सुख।'' इसीलिए कविता की इन पंक्तियों का संदेश आप के और मेरे बल का सम्बल है।

रो रो कर जीवन जीने से,
सौ सौ बार सही मरण।
खटाई में पड़ जाएगा वह,
कोई काम किया बेमन।
अलस-अलस का काम तमाम,
करे अकेला उत्साही मन।
एड़ी चोटी जोर लगाकर,
करो उत्साह का 'संचित धन' ॥ 89 ॥

卐

निरुत्साह के खर पतवार,
उग आएं यदि मन आंगन।
निर्मूल करो सारे संशयों का,
शुद्ध पवित्र कर अंत:करण।
इन्द्र धनुष से सतरंगी भाव,
कर सकेंगे उत्साह वर्द्धन।
हंसी, ठट्ठा, खेल, ठिठौली से,
बढ़े आनन्द का 'संचित धन' ॥ 90 ॥

卐

उत्साहित होइए, उमंग, उल्लास और आनन्द के मोती पाइए।

सच्ची पूंजी

(True wealth)

''सद्गुणों को अपनाना, उन्हें जीवन में ढालना ही व्यक्तिगत संपत्ति है ।
- एम. के. दास

''हे दुःखदायिनी पीड़ा सत्यानाश हो तेरा, तूने यह क्या कर डाला। लोगों का जीना हराम कर रखा है। तेरा गुस्सा कब ठंडा होगा। क्यों भड़कता है तेरा क्रोध, तूने हर व्यक्ति को अपना चुग्गा बना रखा है। कब होगा तेरा विनाश ? मेरे हरे-भरे संसार भारत को कब खाली करके जाएगी।'' गंगा के किनारे एक तेजस्वी तपस्वी महात्मा बड़बड़ा रहे थे। पवित्र जल से एक लहर ने तीव्र गति से उछल कर महात्मा जी का मस्तक छू लिया, मानो अपने नन्हें हाथों से आशीर्वाद देती हुई उत्तर दे रही हो, ''मानव । सत्कर्म और ईश्वर के नाम स्मरण से पाप कर्म के बीज निर्वीर्य हो जाएंगे । पौधे नहीं उगेंगे, दुःख भी नहीं बचेंगे। पाप के वृक्ष पर दुःख रूपी पक्षी आ आकर बैठा करते हैं। उनका यही स्थान सुनिश्चित है।'' महात्मा जी को उत्तर मिल गया था ।

कविता की इन पंक्तियों का संदेश भी हमें ऐसी ही राह दिखा रहा है ।

नींद खोलिए विश्वासों की,
जागो, भोर भई आंगन ।

युग प्रतीक्षित समय आ गया,
जगा रहे हैं धरा गगन ।
आत्म विश्वास बल निर्बल का,
हो न सकेगी तनिक थकन ।
अपने संबल संग सदा,
"राम सहारा" "संचित धन" ॥ 91 ॥

卐

विश्वास कीजिए, जागिए। आप कभी नहीं थकेंगे, यदि आपने राम के नाम को अपना सहारा बना लिया हो।

अपनी अपनी बोली में,
पक्षी करते कृष्ण कीर्तन ।
कूक कूक कर काली कोयल,
ध्यान मग्न निज ईश भजन ।
कबूतर भी झुकझुक करते,
ईश्वर को साष्टांग नमन ।
सोचो हम क्यों अवसर चूकें,
लें राम नाम का 'संचित धन' ॥ 92 ॥

卐

देखो ! वह मनुष्य मुख्य मार्ग छोड़कर बांयी संकरी गली में मुड़ गया है । वह अपने सारे कार्यों को "शॉर्टकट" से करने की शीघ्रता में है । उसकी चाह है कि सारे संसार को सकेर बुहार कर सारे ऐश्वर्यों, सम्पत्ति धन दौलत को अपने घर में भर लूं । दुर्भाग्य और पीड़ा की युगल जोडी इसी सुअवसर की तलाश में थी । मनुष्य ने

कुछ सकेरा बुहारा । कुछ गठरी बांधी । अटैची हाथ में ली । जरा आगे बढ़ा ही था पांव फिसला, टूट गया । सुख सौभाग्य कमाने गया था । कमाकर लाया छः माह के लिए अस्पताल का बैड । पीड़ा और दुर्भाग्य उसे हास्पिटल लेकर पहुंच गये और उसके साथ रहने लगे । कविता में भी इसी बात को दर्शाया है कि उतना खाइए जितना पच सके । अधिकता हर चीज की बुरी है ।

उतने को ही अपना समझो,
होवे जिससे भरण पोषण ।
अधिकता है अभिशाप बावरे,
संताप दिए इसने भीषण ।
बाहर सम्भाल से होने पर,
रस्सी तुड़ाती हर वेदन ।
चींटी को पुत्रीवत मानो,
हो दया, दान का 'संचित धन' ॥ 93 ॥

卐

स्वर्ग सुखों की इच्छा नहीं,
मिले धरा को स्वर्गासन ।
सुख स्वर्ग के फीके फीके,
दुःख के यही गहन कारण ।
सदा आत्मा रमे हरि में,
यही है मेरे नन्द नन्दन ।
"सभी सुखी हों" यह वर दो,
"रामकृष्ण" हों 'संचित धन' ॥ 94 ॥

卐

स्वर्ग के सुखों की बिल्कुल इच्छा नहीं है। स्वर्ग जैसे सुख धरती को मिल जाएं। स्वर्ग के सुख भी फीके-फीके हैं, क्योंकि मनुष्य के दुःखों का कारण ही सुख है। आत्मा भगवान के ध्यान में लगी रहे। भगवान से यह वर चाहता हूँ कि सभी सुखी रहें, सभी ईश्वर के नाम का स्मरण करें।

सार्वभौमिकता का समादर,
अहस्तक्षेप, अनाक्रमण।
आपसी सहयोग, समानता,
शान्ति का सह अस्तित्व रत्न।
पंचशील के खरे सिद्धांत,
गौतम बुद्ध का दर्शन।
जीवन संदेश दिया जग को,
सच्ची पूंजी 'संचित धन' ॥ 95 ॥

卐

सार्वभौमिकता का आदर, अहस्तक्षेप, अनाक्रमण, आपसी सहयोग, समानता, शान्ति का सहअस्तित्व। ये पांचों पंचशील के सिद्धान्त हैं। गौतम बुद्ध का दर्शन यही है। सच्ची पूंजी, संचित धन है। यही जीवन संदेश उन्होंने संसार को दिया।

उगी खेत में मानवता के,
गाजर घास करें उन्मूलन।
छल, कपट, झूठ, पत्ते इसके,
छिपी महामारी परायापन।

नीति प्रीति की पौध लगाकर,
हरा भरा हो राष्ट्र चमन ।
परायों में अपनापन दीखे,
अपनापन अपना 'संचित धन' ॥ 96 ॥

卐

(मानवता रूपी खेत में गाजर घास नाम का पौधा उग आया है । (कहते हैं कि यह विषैला पौधा है, इसके पास जाने, छूने, और इसकी हवा में सांस ग्रहण करने से मनुष्य रोगी हो जाता है ।) छल, कपट, झूठ इसके पत्ते हैं । जिनमें परायापन रूपी महामारी छिपी है । नीति और प्रेम, प्यार की पौध लगाकर ही तुम राष्ट्र की उन्नतिशील बना सकते हो । परायों में अपनापन देखना ही "संचित धन" है।)

जगहित किए वनस्पतियों ने,
बिना स्वार्थ प्राण धारण ।
ग्रास निवाला बन औरों का,
राम-राम करतीं उच्चारण ।
वृक्ष पी ले भक्ति का अमृत,
कर अहं का शिथिलीकरण ।
विनय संकल्प उपासना से,
कर लें जगहित 'संचित धन' ॥ 97 ॥

卐

जब जगहित सर्वोपरि हो जाता है, व्यक्ति में सब गुण इस प्रकार आकर मिलने लगते हैं जैसे नदी, सागर में । व्यक्ति को सब कुछ सम्पदा प्राप्त होने लगते हैं, दुःख दूर होने लगते हैं ।

आँसू और मुस्कान

(Tear and smile)

"मुझे रोकर पाया हुआ प्रकाश नहीं चाहिए। मैं अपना रक्त जलाकर प्रकाश पैदा करूँगा।"

–विवेकानन्द

दुःख-सुख रूपी यात्रियों से खचाखच भरी जीवन-गाड़ी छकाछक चली जा रही है। अपने अपने गन्तव्यों पर ये यात्री उतरते चढ़ते रहते हैं। या यूं कहें कि जीवन एक वाक्य है, जिसके बाद पूर्ण विराम लगता है। और इसके बाद एक नया वाक्य फिर प्रारम्भ होता है। मनुष्य के जीवन कोष में यदि मुस्कान और सहन शक्ति नहीं होता है, तो ये क्रूर मायावी दुःख उसे छठी का दूध याद दिला देते हैं। इसमें हमारी करामाती भूल यह है कि हर क्षण दुःखों की मरी हुई बन्दरिया को सीने से चिपकाए फिरते हैं, कभी छठे छमास ही अपनी हंसी का थोड़ा-सा फुव्वारा खोलकर तनिक मुस्कान-स्नान कर लेते हैं। ये भी गुर हमें काक-स्नान करने वाले आलस्य के पुजारी प्रियवर बन्धुओं की देन है। इसलिए तनिक मुस्कान-स्नान पर उनका भी अहसान है। एक ग्राम का नाम है – सहन ग्राम। वहां सहनशक्ति बसती है। दुःखों की बदली उसी ग्राम कर दीजिए। मुस्कुराइये और खिलखिलाइए। क्योंकि प्रगति के मार्ग का प्रारम्भ यही है। जैसे–

छिपा रखना निज आंसू को,
प्रकट न होवे कहीं वेदन ।
संघर्षरत रहो अनवरत,
बिंधेगा प्रगति मोती का तन ।
मोती हैं, बहुमूल्य मणि है,
ये पुखराज रत्नों के रत्न ।
प्रगति पथ की प्रथम पैड़ी,
सहन शक्ति का 'संचित धन' ॥ 98 ॥

卐

आंसू छिपाइए, आपका दुःख किसी पर भी प्रगट न हो । संघर्ष में जुटे रहो । अपनी उन्नति रूपी मोती को बीन्धने में अवश्य सफल हो सकोगे । ये आंसू बेश कीमती हैं । मोती हैं, बहुमूल्य मणि हैं । ये रत्नों के रत्न हैं । अतः आंसू और दुःख को बिना रोए सहन करना ही उन्नति की प्रथम पैड़ी है ।

आपत्तियों का भय अटल विश्वासी व्यक्ति को अपने लक्ष्य से नहीं डिगा सकता । ऐसे व्यक्ति की कर्मठता देखकर कर विपत्तियों का दम निकल जाता है । वह हर आफत को धर दबोचता है । उसकी एकाग्रता रूपी ओझा शक्ति हर विपत्ति के भूत को भगा देता है । ऐसा व्यक्ति अपनी पीड़ा को प्रकट नहीं करता । कर्मठ व्यक्ति का चेहरा खिला खिला रहता है, उसे देखकर दुःख उल्टे पांव भागता है । वह कर्मठ पुरुष पीड़ाओं के देखकर गा उठता है ।

मुस्कुराते हंसते झेलूंगा,
मुझे मिली जो पीर वेदन ।
मिल मिट्टी में बीज भी तो,
बनफूल खिले प्रसन्न वदन ।
छाये मुझ पर छाये पीड़ा,
ज्यों धरती पर नील गगन ।
नयत-नयन रोये विभु किन्तु-
मैं दुःख छिपा लूं "संचित धन" ॥ 99 ॥

卐

दुःख हंसते हंसते झेलना चाहिए । बीज मिट्टी में मिलकर फूल बनता है । मुझ पर दुःख ऐसे छा जाएं, जैसे धरती पर आकाश छाया हुआ है । आकाश भले ही तारों की आंखों से रो रहा हो किन्तु मैं अपने आंसू छिपा लूंगा ।

मानव श्रेष्ठ सभी जीवों में,
किन्तु श्रेष्ठ किसका जीवन ।
जिसकी पीर, हृदय के छाले,
रिस-रिस फूट-फूट प्रसन्न ।
जग रोया जिन पीड़ाओं से,
बन शंकर वहकर गया सहन ।
उसी से जीवित मानवता,
वह वेदन 'संचित धन' ॥ 100 ॥

卐

पीड़ाओं में भी मुस्कुराते हुए कर्मठ व्यक्तियों ने सदा सफलता की सीढ़ियों को पार करते हुए लक्ष्य का भेदन किया है। इसलिए जागृत होकर सफलता की सीढ़ियां चढ़िए। आगे बढ़िए।

सफलता लक्ष्मी

(Goddess of Success)

"जिस कार्य में तुम्हारी प्रवृत्ति हो, उसी में लगे रहो। अपनी बुद्धि के अनुकूल मार्ग को मत छोड़ो। तुम्हें अवश्य सफलता मिलेगी।"

–जॉन एन्जिलो

अखाड़े में दो मल्लों की कुश्ती सबने देखी है। कितनी चपलता और सजगता उस समय देखने को मिलती है। विद्युत की तेजी से दोनों पहलवान एक दूसरे की उठा पटक करते हैं। मजाल क्या कि एक पहलवान दूसरे के पुट्टे पर हाथ रख दे। वे एक दूसरे का पांव धरती पर नहीं जमने देते। बड़े लाघव से एक दूसरे की धरापटक करते हुए दांव पेंच खेलते हैं। जिसमें अधिक दम-खम होता है, जो अधिक देर टिकने का साहस रखता है, विजय उसके आसपास मंडराने लगती है। इससे भी आगे, जो अधिक फुर्ती से लिपट झपट, उठा-पटक के संघर्ष में बढ़ बढ़कर दांव लेता है, विजयश्री उसे वरण कर लेती है।

आपको भी एक कुश्ती लड़नी है। लेकिन इस मल्ल युद्ध में दूसरा पहलवान नहीं होगा। यह कुश्ती आपको अपने आप से लड़नी है। इसमें भी टक्कर का मुकाबला है। अभी तक आपका पाला दूसरों से पड़ा है, अपने आप से नहीं। हो सकता है, दूसरों को आपने हरा दिया हो। लेकिन अपने आपको जीतना यदि असम्भव

नहीं तो कठिन अवश्य है। आज तक आपने दूसरों को ललकारा है। आज आत्म-पहचान के अखाड़े में उतरे हो। अपने आपको ललकारिए। बड़े लाघव से दांव पेंच लगाइए और भीतर के अवगुणों के दैत्य को पटक दीजिए। जब आपको ज्ञान होगा अपनी शक्ति और सामर्थ्य का। यही आकलन है आपके वास्तविक मूल्य का। यहीं खड़ा है एक समानान्तर प्रश्न। यदि आप दुर्गुण-दैत्य को पटकने में अपने को निर्बल महसूस कर रहे हैं अथवा आपकी सामर्थ्य जबाब दे रही है तो तय है कि दुर्गुण दैत्य अवश्य आपको पटकी देगा और अपनी शक्ति की सामर्थ्य दिखलाएगा। जहां दुर्गुण के दैत्य रहते हों वहां सफलता लक्ष्मी का क्या काम। अतः सच्ची सफलता और विपुल धन लक्ष्मी के भण्डारों पर निर्विघ्न अधिकार और विजय प्राप्ति के लिए दुर्गुण के दैत्यों को पटक कर सद्गुण के देवताओं को प्रसन्न कीजिए।

एक निर्धन पिता का पुत्र था वह। दुःख, निर्धनता और पीड़ाएं एक अरसे से घर में रहती हुई इस परिवार की सेवा में रत थीं। कुछ भी बन सकने के स्वप्न उड़ चुके थे। निर्धनता की फटी चादर लपेटे ही जीवन यापन करना था। घर कंगाली का तमाशा था। रात्रि के प्रकाश को भी उसके पड़ौसी का घर पसन्द था। अन्धकार रूपी डाकिए के झोले में एक भी चिट्ठी नहीं थी, उस परिवार की प्रसन्नता का भविष्य बताने के लिए। लड़के को ये परिस्थितियां हरगिज स्वीकार

नहीं थीं। उसने स्वयं से संघर्ष करने की ठान ली। स्वयं से कुश्ती करने के संकल्प पर डट गया। मस्तिष्क के समस्त दुर्गुणों के दैत्य और सद्गुणों के पहलवान आमंत्रित किए गये। सभी आकर अखाड़े में जमा होने लगे। दुर्गुणों के दैत्यों ने सद्गुणों के समस्त पहलवानों को देखकर अट्टहास किया। लेकिन पहले ही पहलवान मनोबल ने जब अपना सौष्ठव दिखाना प्रारम्भ किया ही था कि दैत्य अखाड़ा छोड़कर सिर पर पांव रखकर भागे।

लड़के ने मनोबल को सर्वस्व मानकर जीवन का कड़ा और खरा संघर्ष किया। पड़ौसी की दीवार से झांकती किरणों के प्रकाश पर एक-एक अक्षर लाकर पढ़ा और एक दिन उसकी लग्न और पुरुषार्थ ने सफलता लक्ष्मी से उसका साक्षात्कार कराया। वह संसार का कर्मठ महापुरुष कहलाया। इसीलिए उठिए। जागिए। और सफलता मिलने तक निरन्तरता बनाए रखिए, क्योंकि-

तैयार रहो सुअवसर हेतु,
सफल रहेंगे सुदृढ़ यत्न।
खबरदार रहो कर्म क्षेत्र में,
लिए हृदय में गहन लग्न।
सफलता लक्ष्मी स्वयं आती,
देख तुम्हारे तप साधन।
निज बल के दृढ़ निश्चय से,
हरषे विजय का 'संचित धन' ॥ 101 ॥

卐

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत् सवितुर्वरेण्यं।
भर्गो देवस्य धीमहि। धीयो यो नः प्रचोदयात्॥

ओंकार एवं तीन व्याहृतियों भू र्भुवः स्वः के सहित वे सविता (सूर्य देवता) हम लोगों की वृद्धि को सत्कर्म के अनुष्ठान के लिए सर्वदा प्रेरित करें।

वे सर्वात्मा प्रभु जिनके संकल्प मात्र से संसार का बनना, पालन होना एवं संहार होना सम्पादित होता है ऐसे सर्वान्तर्यामी सर्वश्रेष्ठ सूर्यदेव के सर्वोत्तम त्रैलोक्य व्यापी तेज का हम ध्यान करते हैं, हमारी बुद्धि भी तेजस्वी हो।

SACRED GAYATRY MANTRA

Om Bhur Bhuvah Svah Tat Savitur Varenyam I
Bhargo Devasya Dhimahi Dhiyoyonah Prachodayat II

Om, the Supreme Divine Creator, pervading the three cosmic regions: *Bhur*, the earth, *Bhuvah*, the ethereal sky and *Svah*, the heaven, we contemplate on the adorable glory of SAVITA, *Surya*, that we may absorb in ourselves His effulgent qualities of life, light and energy.

And we pray that He may stimulate and inspire us with the power of *Dhi*, intelligence and will, and lead us in the way of the great ones DEVAS, to do good and noble deeds.

OM